A Daily News Magazine
इंदौर
शुक्रवार, 12 जुलाई, 2024

सुबह सवेरे

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 262, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

प्रसंगवश

बाइडन और ट्रंप: सत्ता के शीर्ष पर उम्र की ढलान की बात

रेहान फ़ज़ल

इस बार जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप, इनमें से कोई भी चुनाव जीते वो अमेरिकी इतिहास का सबसे बुज़ुर्ग राष्ट्रपति होगा। चार दशक पहले जब रोनल्ड रीगन अमेरिकी राष्ट्रपति चुने गए थे तो उनकी उम्र 69 वर्ष थी। जब वो अपने दूसरे कार्यकाल के बाद रिटायर हुए तो वो 77 वर्ष के हो चुके थे। वैसे अमेरिका में बुज़ुर्गों के काम करते रहने की परंपरा-सी रही है, ब्यूरो ऑफ़ लेबर स्टेटिस्टिक्स के आँकड़ों के अनुसार, अमेरिका में अब भी 75 साल से अधिक के क़रीब 20 लाख लोग काम कर रहे हैं।

एजेंसी का आकलन है कि 2032 आते-आते इस तरह के लोगों की संख्या बढ़कर 33 लाख हो जाएगी। यही नहीं, अमेरिका की चोटी की 500 कंपनियों में कम-से-कम चार मुख्य कार्यकारी अधिकारियों की उम्र अमेरिकी राष्ट्रपति पद के इन दो उम्मीदवारों से भी अधिक है। पिछले अक्तूबर में अमेरिकी अख़बार यूएसए टुडे और सफ़क यूनिवर्सिटी ने एक हज़ार अमेरिकी मतदाताओं के बीच एक सर्वेक्षण कराया था।

उनमें से अधिकतर का मानना था कि कांग्रेस के सदस्य और राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के लिए एक अधिकतम आयु होनी चाहिए लेकिन ये अधिकतम आयु क्या हो उस पर उन लोगों में एक राय नहीं थीं।

कुछ वर्षों पूर्व न्यूयॉर्क टाइम्स और सीबीएस ने भी अमेरिकी मतदाताओं के बीच एक सर्वेक्षण करवाया था इसमें 52 फ़ीसदी लोगों ने कहा था कि राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार को 50 वर्ष से ऊपर नहीं होना चाहिए। अमेरिका की वरिष्ठ स्तंभकार और पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता एना क्विंडलेन ने बड़ी उम्र में अमेरिकी नेताओं के राष्ट्रपति चुनाव लड़ने की प्रवृत्ति की तुलना महिलाओं के 50 से अधिक की उम्र में बच्चे को जन्म देने के प्रयासों से की थी।

जब बाइडन से सीएनएन की एंकर डाना बैश ने पूछा कि आप इस आलोचना का किस तरह जवाब देंगे कि आप अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान 85 साल की तरफ़ बढ़ रहे होंगे, तो बाइडन का जवाब था, 'मेरे आधे राजनीतिक करियर के दौरान मेरी ये कहकर आलोचना की जाती रही है कि मैं राजनीति में कुछ ज़्यादा ही युवा हूँ और अब आप मेरी अधिक उम्र को मुद्दा बना रहे हैं।' ट्रंप की तरफ़ इशारा करते हुए उन्होंने कहा कि ये शख़्स मुझसे तीन साल छोटा ज़रूर है लेकिन मुझसे कहीं कम काबिल है।

जब ट्रंप से भी यही सवाल पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया, 'मेरा स्वास्थ्य इनसे बेहतर है और मेरा वज़न 25-30 साल पहले की तुलना में कहीं कम हो गया है। मैंने हाल ही में दो क्लब स्तर की गॉल्फ़ प्रतियोगिताएं जीती हैं।' वैसे ऊपरी तौर पर बाइडन को कोई मेडिकल समस्या नहीं हैं। वो न तो सिगरेट पीते हैं और न ही शराब। वो रोज़ कसरत करते हैं। लेकिन उन्हें कई मौकों पर लोगों के नाम भूलते और शून्य में ताकते देखा गया है।

पिछले वर्ष बाइडन ने एक भाषण के दौरान यूक्रेन में चल रहे युद्ध को इराक में चल रहा युद्ध बताया। कभी-कभी बाइडन इतना धीमे बोलते हैं कि माइक्रोफ़ोन पर भी उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती।

ट्रंप के डाक्टरों का भी कहना है कि उनका स्वास्थ्य अच्छा है लेकिन उन्हें अक्सर जंक फ़ूड खाते और कोका कोला पीते देखा गया है। कुछ डाक्टरों का मानना है कि अगर ट्रंप का बॉडी-मास इंडेक्स (बीएमआई) 30 से अधिक है तो उन्हें मोटे लोगों की श्रेणी में गिना जाएगा। हाल में गेटी की एक तस्वीर की चर्चा हुई थी जिसके बारे में कहा गया था कि किस तरह कम बूढ़ा दिखने के लिए ट्रंप भारी मेकअप का सहारा ले रहे हैं। उनको भी भूलने ओर लोगों को न पहचानने की आदत है। सीआईए और एफ़बीआई जैसी एजेंसियों को चिंता है कि क्या राष्ट्रपति का चुनाव लड़ रहे इन उम्रदराज़ लोगों के साथ देश की गोपनीय और संवेदनशील सूचनाएं साझा की जा सकती हैं?

सीआईए और व्हाइट हाउस के खुफ़िया अधिकारी रह चुके लैरी फ़ीफ़र ने यूएसए टुडे के 9 सितंबर, 2023 के अंक में छपे अपने एक लेख में लिखा है, 'अमेरिकी खुफ़िया विभाग के अधिकारियों की संवेदनशील सूचनाओं तक पहुंच तभी होती है जब ये सुनिश्चित हो जाए कि उनकी मानसिक फिटनेस पर कोई सवाल न उठाया गया हो। लेकिन अगर सुधार की गुंजाइश न दिखे तो उन्हें मेडिकल ग्राउंड पर इस पेशे से अलग कर दिया जाता है।' अगर एक खुफ़िया एजेंट के लिए ऐसे नियम हैं तो राष्ट्रपति के मामले में क्यों नहीं?

प्यू रिसर्च सेंटर की रिपोर्ट के अनुसार 187 संयुक्त राष्ट्र सदस्य देशों में बाइडन इस समय नवें सबसे बुज़ुर्ग नेता हैं। ट्रंप भी बाइडन से तीन साल छोटे ज़रूर हैं लेकिन उनकी गिनती भी दुनिया के इस समय के 20 उम्रदराज़ नेताओं में होती है। इस समय दुनिया के सबसे युवा नेता बुर्किना फ़ासो के इब्राहिम तराउरे हैं जिनकी उम्र सिर्फ़ 36 साल है। दो और विश्व नेताओं ने अभी तक 40 की उम्र पार नहीं की है। वो हैं आयरलैंड के साइमन हैरिस और चिली के राष्ट्रपति गैबरियल बोरिच। इस समय दुनिया के सबसे बुज़ुर्ग नेता कैमरून के राष्ट्रपति पॉल बिया हैं। उनका जन्म 1933 में हुआ था और उन्होंने 40 साल पहले सत्ता सँभाली थी। वर्ष 2018 में उन्हें एक बार फिर इस पद के लिए चुना गया। अब उन्हें अगला चुनाव नहीं लड़ना पड़ेगा क्योंकि अब वहाँ कानून बनाया गया है कि वो जब तक जीवित रहेंगे उस पद पर बने रहेंगे। फ़लस्तीन प्रशासन के प्रमुख महमूद अब्बास की उम्र इस समय 88 वर्ष है। सऊदी अरब के शाह सलमान भी 88 वर्ष की आयु पूरी कर चुके हैं। ईरान के धार्मिक नेता अली खमेनाई भी 84 वर्ष के हो चुके हैं। वो वर्ष 1989 से इस पद पर बने हुए हैं। इसके बाद आते हैं बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना (76), भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (73), रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन (71), तुर्किए के राष्ट्रपति एर्दोगान और चीन के प्रधानमंत्री शी जिनपिंग (71)। इस समय दुनिया के नेताओं की उम्र का औसत 62 वर्ष है। दुनिया के करीब 34 फ़ीसदी नेताओं की उम्र 60 और 70 के बीच की है। दुनिया के सिर्फ़ तीन फ़ीसदी नेता ऐसे हैं जो 40 से कम उम्र के हैं। डेनमार्क की मेटु फ्रेडरिक्सन दुनिया की सबसे कम उम्र की नेता हैं जिनकी उम्र 46 साल की है। उनसे थोड़ी ही अधिक उम्र इस्तोनिया की प्रधानमंत्री काया कालास की है। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख़ हसीना दुनिया की सबसे बुज़ुर्ग महिला नेता हैं। उनकी उम्र 76 साल है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

बाबा हों या बाई बेटा
सब हैं दियासलाई बेटा
भगवा पहन ठगी है जारी
ठग हैं भाई-भाई बेटा
देख मुनाफा कूद चुके हैं
छोड़-छाड़ कविताई बेटा
अंधभक्त हैं गली - गली में
ईश्वर की परछाई बेटा
सत्ता और सियासत दोनों
पकड़े खड़े कलाई बेटा
चाट रहे हैं, बांट रहे हैं
खुलकर दूध-मलाई बेटा
बरस रही है कृपा सभी पर
जरिया वाई फाई बेटा
नतमस्तक हो जाओ कर लो
जी भर खूब कमाई बेटा।

- राकेश अचल

हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी कक्षाओं में कृषि संबंधी विषयों का अध्ययन आरंभ हो : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

- संकाय का बंधन न हो: विद्यार्थी अपनी रूचि व प्राथमिकता से चुनें विषय
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की सी.एम. राइज स्कूलों की समीक्षा

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हाई स्कूल और हायर सेकेंडरी कक्षाओं में कृषि, हॉर्टिकल्चर, मत्स्य पालन, डेयरी, पशुपालन आदि विषयों की पढ़ाई आरंभ की जाए। प्रदेश की शालाओं में अध्यनरत विद्यार्थी अधिकांशतः खेती बाड़ी की पृष्ठभूमि वाले परिवारों से आते हैं। अतः इन विषयों पर पढ़ाई आरंभ करने से विद्यार्थियों का शालाओं से अधिक जुड़ाव होगा और अध्ययन-अध्यापन परिवार के लिए अधिक उपयोगी बन सकेगा। सी.एम. राइज स्कूलों में इन विषयों की पढ़ाई प्राथमिकता पर आरंभ की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इन कक्षाओं में संकाय व्यवस्था के स्थान पर विद्यार्थियों को अपनी रूचि व प्राथमिकता के आधार पर विषय चुनने की व्यवस्था भी की जाए। यह व्यवस्था उच्च शिक्षा में लागू हो चुकी है, शाला स्तर पर यह व्यवस्था क्रियान्वित करने के लिए शिक्षाविदों, शिक्षकों, स्वयंसेवी संस्था तथा विषय-विशेषज्ञों की टास्क फोर्स गठित की जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंत्रालय में सी.एम. राइज स्कूलों के संचालन की बैठक में यह निर्देश दिए। जनजातीय कार्य मंत्री कुंवर विजय शाह, स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा सहित अधिकारी उपस्थित थे।

प्रत्येक विकासखंड में स्थापित हो एक आई.टी.आई.

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय क्षेत्रों तथा ग्रामीण अंचल में प्राथमिकता के आधार पर सी.एम. राइज स्कूल आरंभ किए जाएं तथा इन शालाओं में शिक्षकों व स्टाफ के लिए आवास की व्यवस्था आवश्यक रूप से सुनिश्चित की जाए। इस संबंध में भारत सरकार से भी सहायता प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करना आवश्यक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि शिक्षा को रोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से प्रत्येक विकासखंड में एक आई.टी.आई. स्थापित करने की दिशा में प्रयास हों, जिन विकासखंडों में आई.टी.आई. नहीं है, वहां निजी क्षेत्र की पहल से सुविधा उपलब्ध कराने की रणनीति बनाई जाए। आगामी इंडस्ट्रियल समिट में भी इस दिशा में इच्छुक निवेशकों से चर्चा की जाए।

पुलिस द्वारा पौध-रोपण दर्शाता है

उनकी पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता : डॉ. यादव

- मुख्यमंत्री ने की नक्सल विरोधी अभियान और कानून व्यवस्था बनाए रखने में पुलिस कार्यप्रणाली की प्रशंसा
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 25वीं बटालियन से किया पुलिस परिवारों के प्रदेश स्तरीय पौधरोपण कार्यक्रम का शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा पर्यावरण दिवस पर आरंभ एक पेड़ मां के नाम अभियान ने पूरे देश में जन-अभियान का स्वरूप ले लिया है। प्रदेश में 5 करोड़ 51 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है। यह पर्यावरण संरक्षण के प्रति सामाजिक चेतना को जगाने की कोशिश है। मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा पौध-रोपण को अपनी प्राथमिकता में शामिल करना पुलिस की पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है। हर्ष का विषय है कि पुलिस जवानों के साथ उनके परिवार भी पौध-रोपण को अपनी जिम्मेदारी मान रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नक्सल विरोधी अभियान में पुलिस की कार्यवाही और संपूर्ण प्रदेश में कानून व्यवस्था बनाए रखने में संवेदनशीलता के लिए पुलिस कार्य प्रणाली की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि पुलिस अपना कार्य प्रभावी तरीके से करती है, राज्य सरकार उनके साथ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव भोपाल की 25 वीं बटालियन में आयोजित 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पौध-रोपण को माँ से जोड़कर अभियान को आत्मीय बनाया- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल, जंगल, जमीन हमें प्रकृति से जोड़ते हैं और मानवता के मूल गुणों को प्रोत्साहित करते हैं। जंगलों के नष्ट होने और अनियंत्रित प्रदूषण के परिणामस्वरूप कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि हुई है, जिसकी पूर्ति पौधे लगाने से ही हो सकती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पौध-रोपण को माँ से जोड़कर अभियान को सभी के लिए आत्मीय और व्यक्तिगत बनाया है। माँ के नाम पर पौधा लगाना भारतीय संस्कृति को नमन है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के आहवान के अनुसार सिर्फ पौधा ही नहीं लगाना, अपितु पाँच फीट का होने तक उसकी देखभाल की जिम्मेदारी भी हमें वहन करनी है।

पौध-रोपण, पुलिस परिवार को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करेगा- पुलिस महानिदेशक श्री सुधीर सक्सेना ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश पुलिस द्वारा राज्य की सभी पुलिस इकाइयों में आयोजित 'एक पेड़ मां के नाम - वृहद पौध-रोपण' अभियान पुलिस कर्मियों और उनके परिजनों को प्रकृति के अधिक निकट लाकर पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित करेगा। धरती माँ की रक्षा करने के साथ पौधे लगाकर धरती को परिपोषत करना भी हमारी जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रोपा रूद्राक्ष का पौधा- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रुद्राक्ष का पौधा लगाया और आकाश में गुब्बारे छोड़कर प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसी समय संपूर्ण प्रदेश की पुलिस इकाइयों में एक साथ 1 लाख 25 हजार पौधे रोपे गए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के कार्यक्रम स्थल आगमन पर पुलिस बैंड की धुन के बीच बालिकाओं द्वारा तिलक कर स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री को गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया गया। मुख्यमंत्री ने परिसर में भ्रमण कर पौध-रोपण के लिए एकत्र हुए पुलिस जवानों और पुलिस परिवारों के सदस्यों से बातचीत की।

मुरैना में जमीनी विवाद में फायरिंग

चाचा-भतीजे समेत 3 लोगों की मौत

सरकारी भूमि के कब्जे को लेकर झगड़ा

मुरैना-अंबाह (नप्र)। मुरैना के अंबाह थाना क्षेत्र के गीला पुरा गांव में गुरुवार दोपहर 12:30 बजे जमीनी विवाद को लेकर फायरिंग हो गई। घटना में तीन लोगों की मौत हुई है। एक पक्ष से चाचा-भतीजे और दूसरे पक्ष के एक शख्स की मौत गोली लगने से हुई है। घटना में एक पक्ष के अमरीश शर्मा (28) और अभिषेक शर्मा (20) की मौत मौके पर हो गई थी। दोनों मृतकों के शवों को ट्रैक्टर से अंबाह पीएम हाउस लाया गया है। वहीं दूसरे पक्ष के श्यामबाबू शर्मा पिता लक्ष्मीनारायण शर्मा (51) के पैर में भी गोली लगी थी, जिसे इलाज के लिए सिविल अस्पताल अंबाह लाया गया था। जिसकी भी इलाज के दौरान मौत हो गई। मृतक श्यामबाबू शर्मा का शव फिलहाल सिविल अस्पताल के ड्रेसिंग कक्ष में रखा है।

एसडीओपी बोले- दो लोगों को हिरासत में लिया- एसडीओपी रवि भदौरिया ने बताया कि गीला पुरा गांव में दो पक्षों में करीब एक बीघा सरकारी जमीन के कब्जे को लेकर विवाद हो गया। घटना में हुई फायरिंग में एक पक्ष के अमरीश शर्मा और अभिषेक शर्मा की मौत हुई है। वहीं दूसरे पक्ष के एक व्यक्ति श्याम बाबू शर्मा की भी इलाज के दौरान मौत हुई है। मामले में दोनों पक्षों की ओर से पहले कोई भी रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई गई है। आज एक पक्ष जमीन जोतने के लिए गया था और दूसरे पक्ष ने फायरिंग कर दी। दो लोगों को हिरासत में लिया है। शेष आरोपियों को पकड़ने के लिए टीमें रवना की गई हैं।

दोनों पक्ष में 30 साल से चल रहा था विवाद- दोनों पक्ष में करीब 30 से 35 वर्ष पुराना विवाद बताया जा रहा है। इन दोनों पक्षों में शुरू से ही करीब 11 बीघा सरकारी जमीन को लेकर विवाद बताया जा रहा था। इसी विवाद के चलते दोनों पक्ष कई बार आमने सामने आ चुके थे। हालांकि पहले कभी दोनों पक्ष में फायरिंग की घटना नहीं हुई थी बात केवल गाली-गलौज से लेकर एक दूसरे के घर पर आवाजाही बंद करने तक ही सीमित थी। इस सरकारी जमीन से लगी ही रामवतार शर्मा पक्ष की करीब 35 बीघा जमीन है। वहीं श्यामबाबू शर्मा की भी इसी सरकारी जमीन से करीब 40 बीघा जमीन लगी हुई थी। दोनों पक्ष के लोग यह चाहते थे कि बंजर पड़ी जमीन को वह अपने अधिपत्य में ले लें।

इसी मंशा से आज मृतक अमरीश शर्मा और अभिषेक शर्मा ट्रैक्टर लेकर खेत जोतने पहुंचे तो दूसरे पक्ष के लोग हथियारों के साथ मौके पर पहुंच गए और झगड़ा शुरू हो गया। जिसमें श्यामबाबू पक्ष के लोगों ने फायरिंग शुरू कर दी। जिसमें मृतक अमरीश पुत्र रामावतार शर्मा उम्र 28 अभिषेक पुत्र राधाचरण शर्मा उम्र 20 साल की घटना स्थल पर मौत हो गई।

टल गई सुनवाई, छात्रों को और करना होगा इंतजार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में नीट-यूजी मामले को लेकर गुरुवार को होने वाली सुनवाई अगली तारीख तक टाल दी गई। इस मामले में अब अगली सुनवाई 18 जुलाई को होगी। इससे पहले सीबीआई ने कोर्ट में बंद लिफाफे में अपनी रिपोर्ट दाखिल कर दी है। ऐसे में सभी छात्रों की निगाहें शीर्ष अदालत के फैसले पर टिकी हैं कि क्या नीट-यूजी परीक्षा कैंसिल होगी और फिर से एग्जाम होंगे। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट में केंद्र सरकार, एनटीए और सीबीआई की ओर से एफिडेविट दाखिल किया जा चुका है। छात्रों ने सुप्रीम कोर्ट में जो याचिका दाखिल की है, उसमें कथित पेपर लीक मामले की दोबारा परीक्षा कराने और उचित जांच की मांग की गई है। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा की बेंच मेडिकल प्रवेश परीक्षा में गड़बड़ियों से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई कर रही है। केंद्र और एनटीए ने 5 मई को आयोजित परीक्षा में किसी भी तरह की सामूहिक गड़बड़ी से इनकार किया है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38.5 °c
न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ शुक्रवार, 12 जुलाई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

एमएसपी की कानूनी गारंटी, कर्ज माफी...

फिर शुरू होगा आंदोलन

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) ने घोषणा की है कि वे अपनी लंबित मांगों के लिए फिर से आंदोलन शुरू करेंगे। उनकी प्रमुख मांगों में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी और किसान कर्ज माफी शामिल हैं। एसकेएम के नेताओं ने कहा है कि सरकार ने उनकी मांगों को अनदेखा किया है और उन्हें मजबूरन फिर से आंदोलन करना पड़ रहा है। उन्होंने सरकार से जल्द से जल्द उनकी मांगों को पूरा करने का आग्रह किया है ताकि किसान समुदाय को राहत मिल सके। वह न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की कानूनी गारंटी चाहते हैं।

भारतवंशी ने गीता पर हाथ रखकर ली सांसदी की शपथ

- 27 साल की शिवानी लीस्टर ईस्ट से सांसद

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन की संसद में बुधवार को भारतीय मूल की सांसद शिवानी राजा ने भगवद गीता पर हाथ रख कर सांसदी की शपथ ली। उन्होंने ऋषि सुनक की कंजर्वेटिव पार्टी से लीस्टर ईस्ट सीट से जीत दर्ज की है। शिवानी

ने लंदन के पूर्व डिप्टी मेयर राजेश अग्रवाल को 4 हजार से ज्यादा वोटों से हराया है। लीस्टर ईस्ट को लेबर पार्टी का गढ़ माना जाता है। शिवानी ने यहां 37 साल बाद कंजर्वेटिव पार्टी को जीत दिलाई है। शपथ लेने के बाद शिवानी ने बताया गीता के साथ शपथ लेना अच्छा लगा।

शीना बोरा हत्याकांड

गायब हड्डियां सीबीआई के ऑफिस में ही मिलीं

मुंबई (एजेंसी)। शीना बोरा हत्याकांड को लेकर 10 जुलाई को मुंबई की ट्रायल कोर्ट में सुनवाई हुई। इस दौरान सीबीआई ने कोर्ट में बताया कि अप्रैल में गायब हुई हड्डियां सीबीआई के दिल्ली वाले ऑफिस के मालखाने में मिल गई हैं। यह

खुलासा उस दिन हुआ, जब कोर्ट को मिले एक ईमेल में आरोप लगाया गया कि शीना की हड्डियां गायब नहीं हुई, बल्कि वे एक फोरेंसिक एक्सपर्ट के पास हैं, जिसने उनकी जांच की थी और जो गवाह के तौर पर अदालत के सामने गवाही दे रहा था। ईमेल में आरोप लगाया गया है कि इस गवाह ने अचानक बहुत संपत्ति अर्जित कर ली है। ईमेल भेजने वाले ने खुद को फोरेंसिक विशेषज्ञ का भाई बताया। इन हड्डियों के न मिलने से पिछले महीने फोरेंसिक विशेषज्ञ की गवाही को रोक दिया गया था। इन अवशेषों को सबूत के तौर पर पेश नहीं किया जाएगा।

पुतिन-मोदी की 'जादू की झप्पी' से चीन को लगी मिर्ची

अमरीका भी टेंशन में, भारत के बढ़ते कद से हो रहा परेशान

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की हालिया रूस यात्रा ने न केवल भारत-रूस संबंधों को नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी बड़ी चर्चा को जन्म दिया। पांच साल बाद रूस की धरती पर कदम रखते ही मोदी का स्वागत गर्मजोशी और शाही तरीके से हुआ, जो दोनों देशों के बीच गहरे संबंधों को दर्शाता है। यह यात्रा खास इसलिए भी रही क्योंकि यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद यह मोदी की पहली मॉस्को यात्रा थी, जिस पर अमेरिका समेत पश्चिमी देशों की खास नजर थी। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री मोदी की शान में कोई कसर नहीं छोड़ी। इस यात्रा के दौरान पीएम मोदी को रूस के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया, जो दोनों देशों के बीच सम्मान और विश्वास को और भी मजबूत बनाता है। पुतिन और मोदी का गर्मजोशी से गले मिलना कई मायनों में महत्वपूर्ण था।

उनका गले मिलना यह संकेत था कि रूस को पश्चिमी दबाव के संतुलन के लिए केवल चीन पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है। यह पश्चिम के लिए एक स्पष्ट संदेश भी था कि भारत किसी एक खेमे में बंधकर नहीं रहेगा। प्रधानमंत्री मोदी की इस यात्रा के बाद यह चर्चा उठी कि भारत ने शीत युद्ध के दौरान के गुटनिरपेक्ष आंदोलन को वापस ला दिया है। गुटनिरपेक्षता की इस नीति का उद्देश्य था कि भारत किसी भी बड़े शक्ति गुट का हिस्सा बने बिना अपनी स्वतंत्र नीति अपनाए। इस यात्रा ने एक बार फिर से इस नीति को महत्व दिया।

'नीट' मामले में सीबीआई के हाथ लगी 'बड़ी मछली'

झारखंड से रॉकी को किया गिरफ्तार, 10 दिन की मिली रिमांड

पटना (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले में जिस शख्स की तलाश सीबीआई को सबसे ज्यादा थी। आखिरकार उस आरोपी रॉकी को झारखंड से गिरफ्तार कर लिया है। जिसे गुरुवार को पटना कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने सीबीआई को रॉकी की 10 दिनों की रिमांड दी है। इससे पहले रॉकी के भारत छोड़ नेपाल भागने की खबर थी। जिसे आज सीबीआई ने धर दबोचा है। दरअसल रॉकी ही वो कड़ी है।

जिसकी मदद से मुख्य सेटर तक सीबीआई पहुंच सकती है। जिसकी भूमिका प्रश्न-पत्र को आउट कराने में सबसे अहम है। रॉकी मूलरूप से बिहार के नवादा का रहने वाला है। उसका वास्तविक नाम राकेश है। पिछले कुछ सालों से वह झारखंड की राजधानी रांची में रहकर रेस्टोरेंट चलाता है। सीबीआई टीम ने चार मुख्य आरोपियों चिंटू, मुकेश, मनीष और आशुतोष को सात दिनों की रिमांड पर लेकर पूछताछ की। जिसमें रॉकी से जुड़े कई सवाल पूछे गए थे बताया जा रहा है कि रॉकी ने ही नीट का पेपर लीक होने के बाद उसे हल कराकर चिंटू के मोबाइल पर भेजा था। चिंटू से खासतौर से रॉकी के बारे में जानकारी इकट्ठा की जा रही है। चिंटू से एक और संजीव मुखिया को लेकर भी जानकारी ली जा रही है। क्योंकि वह संजीव की भांजी का पति है। संजीव के नेपाल भागने की सूचना मिल रही है।

राकांपा ने जम्मू-कश्मीर में विस चुनाव की तैयारी शुरू कर दी

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव की सुगबुगाहट शुरू होते ही राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने राज्य में पार्टी गतिविधियां तेज कर दी हैं। इसे देखते हुए प्रदेश कमेटी ने पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता बृजमोहन श्रीवास्तव के दौरे की घोषणा की है। यह जानकारी जम्मू-कश्मीर प्रदेश अध्यक्ष डॉ. तारिक रसूल ने दी है कि राष्ट्रीय महासचिव कश्मीर संभाग के अपने 8 दिवसीय दौरे के दौरान पार्टी की सक्रियता और जम्मू-कश्मीर के विकास के लिए पार्टी की कार्ययोजना की जानकारी पर चर्चा करेंगे। डॉ. रसूल ने कहा कि उनका उद्देश्य हमारे जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाना है। इस दौरान श्रीवास्तव जिले के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और विशेषकर बूथ प्रभारियों से व्यक्तिगत रूप से मिलेंगे और चर्चा करेंगे। ये बैठकें हमारे संगठनात्मक ढांचे को मजबूत करेंगी, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि हमारे जमीनी स्तर के लड़ाके आगामी विधानसभा चुनावों के लिए कितने तैयार हैं।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता होने के नाते वह मीडिया के महत्व को जानते हैं और प्रेस की ताकत को समझते हैं, इसीलिए हमने स्थानीय पत्रकारों, प्रेस प्रतिनिधियों और मीडिया से मिलने का कार्यक्रम भी रखा है। हमारी पार्टी पारदर्शी संचार की वकालत करती है और हम सवालों का समाधान करना और पार्टी के दृष्टिकोण को स्पष्ट करना महत्वपूर्ण मानते हैं। डॉ. तारिक ने विश्वास जताया कि श्रीवास्तव कश्मीर के लोगों की जमीनी हकीकत जानना चाहते हैं ताकि वह उनकी आकांक्षाओं को समझ सकें। प्रदेश महासचिव (संगठन) डार फैयाज अहमद और इजाज हिलाल गुनाई ने बताया कि श्रीवास्तव 12 जुलाई को श्रीनगर पहुंचेंगे और 19 जुलाई 2024 को वापस लौटेंगे, इस दौरान वह 8 जिलों और लगभग 37 निर्वाचन क्षेत्रों को कवर करेंगे। डॉ. रसूल का मानना है कि श्री बृजमोहन श्रीवास्तव की कार्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता जम्मू-कश्मीर में हमारी पार्टी के भविष्य को मजबूत करेगी। श्रीनगर रवाना होने से पहले बृजमोहन श्रीवास्तव ने कहा कि हमारी पार्टी के नेता अजित पवार और प्रफुल्ल पटेल की लोगों की सेवा करने के प्रति अटूट प्रतिबद्धता है। उनका मानना है कि हमारी राजनीतिक यात्रा पदों के लिए नहीं बल्कि उन लोगों के जीवन में बदलाव लाने के लिए है जिनका हम प्रतिनिधित्व करते हैं।

महिला साइकिलिस्ट का स्वागत

भोपाल। राष्ट्रीय महिला खिलाड़ी व साइकिलिस्ट आशा मालवीय ने भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा से भाजपा प्रदेश कार्यालय में सौजन्य भेंट की। भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद जी ने आशा मालवीय का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। इस अवसर पर प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष उषा अग्रवाल भी उपस्थित थे।

ट्रेनी आईएएस ने हलफनामे में मानसिक रूप से अक्षम बताया

- बोलीं-देखने में भी दिक्कत, मेडिकल टेस्ट से 6 बार इनकार, अब सिलेक्शन पर सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र की एक ट्रेनी आईएएस अफसर पूजा खेडकर काफी चर्चा में हैं। पूजा ने संघ लोक सेवा आयोग को दिए एक हलफनामे में दावा किया है कि वह मानसिक रूप से अक्षम हैं और उन्हें देखने में भी दिक्कत होती है। यूपीएससी की रिपोर्ट के मुताबिक, पूजा ने मेडिकल टेस्ट देने से 6 बार मना किया था। मेडिकल टेस्ट देना जरूरी होता है। अपुष्ट

रिपोर्ट्स बताती हैं कि पूजा का पहला मेडिकल टेस्ट दिल्ली एम्स में अप्रैल 2022 में शेड्यूल हुआ था। उन्होंने कोविड पॉजीटिव होने का हवाला देकर इसमें शामिल होने से मना कर दिया था। हालांकि ये साफ नहीं हुआ है कि जब पूजा ने एग्जाम में शामिल होने से मना कर दिया था तो फिर सिलेक्शन क्यों और कैसे हुआ। पूजा 2023 की आईएएस अफसर हैं और अहमदनगर की रहने वाली हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, पूजा ने जुलाई और अगस्त में हुए टेस्ट शेड्यूल में भी शामिल होने से मना कर दिया था। सितंबर में हुए शेड्यूल टेस्ट को भी उन्होंने आधा अटेंड किया था। यही नहीं, पूजा टेस्ट में भी शामिल नहीं हुई थीं। इस टेस्ट में इस बात की जांच होती है कि आप देख सकते हैं या नहीं।

बजट से पहले नीतिश की पार्टी ने चल अपनी दी 'स्पेशल' चाल

राजद चीफ लालू यादव की 'अगस्त' वाली बात होगी सच!

पटना (एजेंसी)। बिहार को स्पेशल स्टेटस मिलना चाहिए, इसको लेकर एक बार फिर जेडीयू ने मोर्चा खोल दिया है। नीतिश सरकार के मंत्री अशोक चौधरी ने कहा कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा मिलना चाहिए। अगर स्पेशल स्टेटस संभव नहीं है तो विशेष पैकेज दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि 23 जुलाई को पेश होने वाले केंद्रीय बजट को लेकर हमलोग आशान्वित हैं। उम्मीद करते हैं कि आम लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखा जाएगा। बजट से पहले जेडीयू के स्पेशल चाल से अब सवाल उठने लगे हैं कि क्या लालू यादव की भविष्यवाणी सच होगी। लालू ने कहा था कि अगस्त में मोदी सरकार गिर जाएगी। अशोक चौधरी ने बुधवार को पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि विशेष राज्य का दर्जा मिलना राज्य के लिए एक तरह से पैकेज की तरह ही होगा। उन्होंने कहा कि पहले राज्य सरकार 10 प्रतिशत का योगदान करती थी और 90 प्रतिशत केंद्र सरकार देती थी, लेकिन अब यह अनुपात 50-50 हो गया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार चाहती है कि उसका योगदान कम हो और इसके लिए केंद्र सरकार को एक नया फॉर्मूला तैयार करना होगा। उन्होंने कहा कि हम लोग विशेष पैकेज या विशेष राज्य के दर्जे की मांग जरूर करेंगे। अगर विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिला, परिस्थितियां अगर अनुकूल नहीं रहीं, तो हमें कम से कम विशेष पैकेज तो मिलना ही चाहिए।

इसरो के वैज्ञानिकों को रामसेतु पर अब मिल गई बड़ी सफलता

- तैयार किया रिज़ॉल्यूशन वाला मैप, स्पेस एजेंसी नासा की ली मदद

नई दिल्ली (एजेंसी)। रामायण में रामसेतु का जिक्र आप बचपन से सुनते आ रहे होंगे। इसे भगवान राम की वानर सेना ने रामेश्वरम द्वीप से श्रीलंका के मन्नार द्वीप के बीच बनाया था, ताकि रावण की लंका से माता सीता को वापस लाया जा सके। इसी रामसेतु को लेकर अब इसरो के

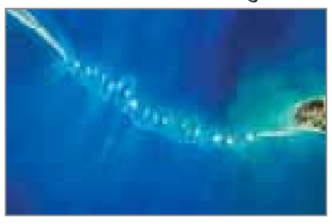

वैज्ञानिकों को बड़ी सफलता मिली है। खुशखबरी दी गई है कि वैज्ञानिकों ने रामसेतु, जिसको कि एडम ब्रिज भी कहा जाता है, उसका एक डिटेल्ड मैप तैयार किया है। इसके लिए उन्होंने अमेरिकी स्पेस रिसर्च संस्थान नासा की सैटेलाइट्स के डेटा का इस्तेमाल किया है। रिसर्चर्स ने इसरो-2 के अक्टूबर 2018 से अक्टूबर 2023 तक के डेटा का उपयोग करते हुए रिज़ॉल्यूशन वाला मैप तैयार किया है।

सिसोदिया की याचिका पर सुनवाई से हटे जस्टिस संजय कुमार

निजी कारणों का हवाला दिया, सुप्रीम कोर्ट की नई बेंच अब 15 जुलाई को सुनवाई करेगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजय कुमार ने गुरुवार को एएपी नेता और पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया की जमानत की पुनर्विचार याचिका पर सुनवाई से खुद को अलग कर लिया। दिल्ली शराब नीति मामले में सिसोदिया की याचिका पर सुनवाई होनी थी। जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस संजय करोल और जस्टिस संजय कुमार की बेंच सुनवाई करने वाली थी। हालांकि, जैसे ही मामला सुनवाई के लिए रखा गया, जस्टिस खन्ना ने कहा, हमारे भाई (जस्टिस संजय कुमार) को कुछ दिक्कत है। वह निजी कारणों के चलते इस मामले की सुनवाई नहीं करना चाहते। अब 15 जुलाई को दूसरी बेंच मामले की सुनवाई करेगी। जस्टिस संजय कुमार इसका हिस्सा नहीं होंगे। सिसोदिया ने शराब नीति घोटाले से जुड़े ईडी और सीबीआई केस में जमानत पर पुनर्विचार को लेकर दो अलग-अलग याचिकाएं लगाई हैं।

मोदी सरकार ने पूरी की चंद्रबाबू नायडू की इच्छा

आंध्र के लिए 60 हजार करोड़ की योजना को दी मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की थी। दोनों नेताओं की मुलाकात के अभी पांच ही दिन बीते हैं। इसी बीच केंद्र ने आंध्र प्रदेश में 60,000 करोड़ रुपये के निवेश से तेल रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल हब स्थापित करने की प्रमुख मांग को स्वीकार कर लिया है। केंद्र की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) सरकार में प्रमुख सहयोगी नायडू ने बुधवार को भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) के शीर्ष अधिकारियों से मुलाकात कर

राज्य में रिफाइनरी स्थापित करने को लेकर चर्चा की थी। अब लोगों की नजरें बिहार के सीएम नीतिश कुमार पर जा टिकी हैं। ऐसे इसलिए क्योंकि केंद्र में टीडीपी के साथ जेडीयू में अहम भूमिका में है, भले ही उसकी लोकसभा की सीटें टीडीपी के बराबर न हों।

रिपोर्ट में जानकारों के हवाले से लिखा है कि रिफाइनरी के लिए तीन स्थानों पर चर्चा की गई। इनमें श्रीकाकुलम, मछलीपट्टनम और रामायपट्टनम शामिल हैं। लोगों ने बताया कि रिफाइनरी की औपचारिक घोषणा 23 जुलाई को पेश किए जाने वाले बजट में किए जाने की संभावना है। स्थानों का मूल्यांकन किया जाएगा और फिर उन्हें अंतिम रूप दिया जाएगा।

अनंत-राधिका की शादी में मेहमान खाएंगे काशी की स्पेशल चाट

रिसेप्शन में बनारस गली होगी, इसमें क्षीरसागर की मिठाई, चौक का पान मिलेगा

वाराणसी (एजेंसी)। मुकेश अंबानी के बेटे अनंत अंबानी 12 जुलाई को राधिका मर्चेंट से शादी करने वाले हैं। मुंबई में हो रही इस शादी में मेहमानों को बनारस का जायका मिलेगा। अंबानी फैमिली के खास मेहमान बनारस के चौक का मशहूर पान, गोदौलिया की स्पेशल चाट और क्षीर सागर की मिठाइयों का लुत्फ उठाएंगे। 13 जुलाई को रिसेप्शन में बनारस गली नाम की एक गैलरी होगी। गैलरी में 4-4 वैराइटी की चाट, मिठाई और पान होगा। वाराणसी के 45 कारीगरों की टीम मुंबई पहुंच चुकी है। 15 दिन पहले नीता अंबानी वाराणसी में थीं। उन्होंने बाबा विश्वनाथ को बेटे अनंत की शादी का कार्ड चढ़ाया। उसके बाद गोदौलिया पर आकर काशी चाट का स्वाद चखा। स्वाद भाया तो उन्होंने ऑर्डर दिया।

दुकानदार से कह दिया कि शादी में आप लोग मुंबई आएं। वहां पर इस चाट का स्टॉल लगाएं। इसके बाद काशी चाट और अंबानी टीम की ओर से लगातार कम्युनिकेशन चल रहा था।

बर्थडे के दिन ही युवती की एक्सीडेंट में मौत

डम्पर की टक्कर से घायल हुई थी, ड्यूटी से लौटकर शाम को बहनों को देने वाली थी पार्टी

इंदौर (नप्र)। इंदौर के धार रोड पर सिंहासा के नजदीक एक हादसे में नेशनल स्टील कर्मचारी युवती की मौत हो गई। वह बाइक से अपने रिश्तेदार के साथ ड्यूटी पर जाने के लिये निकली थी। इस दौरान हादसे का शिकार हो गई। चंदन नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक घटना सिंहासा ग्राम की है। यहां पर राम पाटीदार (28) निवासी लिंबोदी और पूजा नागर (25) निवासी एमआर 10 बाइक से घाटा बिल्लौद की तरफ जा रहे थे। उनकी बाइक को डंपर ने टक्कर मार दी। पूजा की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं राम घायल हुआ है। पुलिस के मुताबिक मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्ट्म के लिए अस्पताल भेजा गया है।

पूजा का बर्थडे था- परिजनों ने बताया कि पूजा नागर का आज ही बर्थडे था। बुधवार रात परिवार के साथ उसने केक काटा था। वह ड्यूटी से लौटकर शाम को परिवार को पार्टी देने वाली थी। वह तीन बहनों में बीच की है। उससे बड़ी और छोटी बहन घर पर ही साड़ी की दुकान चलाती हैं। इनके पिता इलेक्ट्रिशियन हैं। साथी राम ने बताया कि दोनों स्टील कंपनी में काम करते हैं। वहीं सुबह ड्यूटी पर जाने के लिये निकले थे। पुलिस ने डंपर जब्त कर लिया है।

एक पेड़ मां के नाम; मंत्री सिंधिया करेंगे पौधरोपण

51 लाख पौध मिशन कार्यक्रम में शामिल होने इंदौर पहुंचे

इंदौर (नप्र)। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में गुरुवार को केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया इंदौर में पौधरोपण करेंगे। मंत्री सिंधिया दोपहर 3 बजे इंदौर पहुंचे। यहां एयरपोर्ट पर प्रदेश सरकार के मंत्री कैलाश विजयवर्गीय और महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने उनकी अगवानी की। सिंधिया यहां से एकायना स्कूल के पीछे, कनाडिया थाने के पास टीपीएस-5 आईडीए कॉलोनी में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। एक पेड़ मां के नाम अभियान में इंदौर में 51 लाख पौधों को लगाने का काम तेजी से जारी है। कार्यक्रम में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, तुलसीराम सिलावट, सांसद शंकर लालवानी और मेयर पुष्यमित्र भार्गव विशेष रूप से मौजूद रहेंगे।

पुरानी फ्रेंड से बात करने पर टोका तो मार डाला

इंदौर में जंगल से मिली थी छात्रा की हड्डियां, कपड़े-ब्रेसलेट; युवती समेत सीनियर गिरफ्तार

इंदौर (नप्र)। इंदौर में शिप्रा थाना क्षेत्र से लापता कॉलेज छात्रा की हत्या उसके फ्रेंड्स ने कर दी। पुलिस ने छात्रा के कॉलेज के एक सीनियर स्टूडेंट और एक अन्य कॉलेज की छात्रा को गिरफ्तार किया है। आरोपियों को गुरुवार को कोर्ट में पेश किया जा सकता है। आरोपियों ने प्रारंभिक पूछताछ में बताया कि फ्रेंड सर्कल में विवाद हुआ था। इसी कारण सैयद सहारा (19) का कार में गला घोटा फिर चाकू मारकर हत्या कर दी। सैयद सहारा सिक्स लेन बायपास स्थित प्राइवेट कॉलेज से बीफॉर्मा कर रही थी। आरोपी गौरव सुभाष सरकार (23) सैयद सहारा के कॉलेज में ही पढ़ता था। आरोपी छात्रा स्निग्धा सुनील मिश्रा (18) दूसरे कॉलेज में पढ़ती है। गौरव की दोनों से दोस्ती थी। सैयद सहारा ने गौरव को स्निग्धा से बात करते देख लिया था। उसी के बाद से विवाद शुरू हुए। पुलिस ने बताया कि अप्रैल 2024 में दोनों ने किसी बहाने से सैयद सहारा को बुलवाया था। उसे आर्मी बीड किशन गंज तरफ कार में ले गए। हत्या करके शव को महू के पास जंगल में फेंका गया था।

दो महीने बाद जंगल छाना, मानव हड्डियां और बाल ही मिले

हत्या का शक पुख्ता होने के बाद पुलिस गुमशुदगी के करीब दो महीने बाद (10 जुलाई) को दोनों आरोपियों को लेकर हरसोला फाटा के जंगल में पहुंची। दोनों की निशानदेही पर शव फेंकने वाले स्थान की छानबीन की।

करीब 18 घंटे चली सर्चिंग के बाद मानव हड्डियां, बाल के अलावा ब्रेसलेट आदि मिले। इसी आधार पर पहचान करने की कोशिश की गई। अब डीएनए जांच अलग से कराई जाएगी, लेकिन प्रारंभिक कबूलनामा से पुलिस ने संकेत दिए हैं कि हड्डियां, बाल, ब्रेसलेट आदि सैयद सहारा के हैं।

अलग-अलग कॉलेज की छात्राओं से दोस्ती तोड़ने का दबाव था

पुलिस के अनुसार, आरोपी गौरव पहले राऊ स्थित प्राइवेट कॉलेज में पढ़ता था। छात्रा स्निग्धा भी वहीं पढ़ी थी। यहीं दोनों मिले। किसी कारण से गौरव को कॉलेज से बाहर कर दिया। फिर उसने बायपास स्थित अन्य प्राइवेट कॉलेज में एडमिशन ले लिया। यहां गौरव के संपर्क में सैयद सहारा आई। सैयद सहारा को स्निग्धा के बारे में पता चला तो उसने आपत्ति ली। इसके बाद विवाद बढ़े। पुलिस को पता चला है कि आरोपी छात्रा स्निग्धा इंदौर के ही एक कॉलेज के प्रोफेसर की बेटी है।

पिता ने हाईकोर्ट में अर्जी लगाई तब एक्शन में आई थी पुलिस

सैयद सहारा अप्रैल 2024 से लापता थी। शिप्रा थाना क्षेत्र में परिवार ने गुमशुदगी दर्ज कराई। जब लंबा समय ज्यादा गुजर गया और बेटी नहीं मिली तो पिता ने हाईकोर्ट में अर्जी दायर कर दी। बेटी को जल्द तलाशने की गुहार लगाई। मामला हाईकोर्ट पहुंचा तो पुलिस एक्शन में आ गई। शक के आधार पर गौरव सरकार और स्निग्धा मिश्रा को हिरासत में लिया।

इंदौर के मंदिर में आधी रात को डकैती

पुजारी-महंत को बंधक बनाया, मंदिर निर्माण के रुपए, दानपेटी और सोने का लॉकेट लूटा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के बाणगंगा थाना इलाके के ग्राम अलवासा के एक मंदिर में मंगलवार-बुधवार की रात डकैती हो गई। रात करीब 1.30 बजे आए बदमाशों ने पुजारी, महंत और सेवादार को बंधक बनाकर लूट लिया। बदमाश यहां से दानपेटी, मंदिर बनाने के लिए जमा पैसा, मां दुर्गा की प्रतिमा पर चढ़ा सोने का मंगलसूत्र, सोने का पैंडल लूटकर भाग गए। बदमाशों की संख्या 8 से 10 के आसपास बताई जा रही है।

पुजारी रामकिशन ने पुलिस को बताया कि ग्राम अलवासा के वैष्णोधाम मंदिर में वह सेवक महेशदास के साथ बरामदे में सो रहे थे। महंत कमलदास कमरे में सो रहे थे। रात करीब 1.30 बजे बदमाश लाठी और अन्य हथियार लेकर मंदिर में घुस गए। मेरी नींद खुली और मैंने पूछा कि कौन है तो उनमें से एक बदमाश ने मेरे सिर में डंडा मार दिया। खून बहता देख मैं अचेत हो गया। शोर की आवाज सुनकर महंत कमल दास बाहर आए। तो बदमाशों ने उन्हें भी पीटा। इसके बाद महंत, मुझे और सेवक को

रस्सी, गमछे से बांध दिया। कहा कि शोर मचाया तो जान से मार देंगे। इसके बाद बदमाशों ने मंदिर में रखा नकदी, माता जी का सोने का पैंडल और मंदिर निर्माण के लिये जमा रुपए व दानपेटी उठाई और भाग गए।

बदमाशों के जाने के कुछ देर बाद सभी एक-दूसरे के जैसे-तैसे हाथ-पैर खोले। इसके बाद गांव वालों को जगाया। वे इकट्ठा हुए तो उन्हें पूरे घटनाक्रम से अवगत कराया। इसके बाद बाणगंगा थाने जाकर केस दर्ज कराया। घायल पुजारी रामकिशन। बदमाशों ने पुजारी के सिर में डंडा मारकर घायल कर दिया। बदमाशों के भागने के बाद उन्होंने पुलिस को रिपोर्ट लिखाई और खुद का इलाज कराया। पुलिस ने केस दर्ज कर गांव जाने वाले रास्तों और टोल नाकों के फुटेज तलाश रही है। पुलिस रामकिशन और अन्य के बताए कद-काठी और हुलिये के आधार पर तलाश कर रही है।

इंदौर में बदलने लगा मौसम

दिन के तापमान में 3 डिग्री की गिरावट; आज हल्की बारिश के आसार

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पिछले 24 घंटों में मौसम बदला है। इस दौरान दिन में 3 डिग्री और रात में 1 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आई है। इसके बावजूद उमस है। गुरुवार सुबह से बादल छाए हुए है और बीच-बीच में धूप भी निकल रही है। मौसम वैज्ञानिकों ने आज हल्की बारिश के आसार जताए हैं।

मंगलवार को दिन का तापमान 33.4 (+2) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। बुधवार को दिन में 22 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चली। इस दौरान तापमान 3 डिग्री लुढ़ककर 30.8 (0) डिग्री सेल्सियस पर आ गया। ऐसे ही मंगलवार को रात का तापमान 24.4 (+1) डिग्री सेल्सियस था। इसमें 1 डिग्री की गिरावट आई और तापमान 23.6 (+1) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। दिनभर में बारिश नहीं हुई।सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन के मुताबिक प्रदेश में 2 साइक्लोनिक सर्कुलेशन और ट्रफ लाइन की वजह से सिस्टम एक्टिव है। ये सिस्टम प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में बारिश करा रहे हैं। इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में गुरुवार को हल्की बारिश का अनुमान है।

मार्च 2025 तक काम पूरा करने का लक्ष्य

ओंकारेश्वर रोड रेलवे स्टेशन पर मंदिर की प्रतिकृति होगी, अंडरपास से आसानी से प्लेटफॉर्म पर जा सकेंगे

इंदौर (नप्र)। महू-खंडवा गेज कन्वर्जन प्रोजेक्ट में ओंकारेश्वर रोड रेलवे स्टेशन की नई बिल्डिंग का काम तेजी से चल रहा है। इस बिल्डिंग की खास बात यह है कि यहां एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म तक जाने के लिए अंडरपास बनाया जा रहा है। रेलवे अधिकारियों ने कहा कि यह रतलाम रेल मंडल का इस तरह का पहला स्टेशन होगा। स्टेशन के ऊपर ओंकारेश्वर मंदिर की प्रतिकृति बनाई जाएगी। यहां रानी कमलापति स्टेशन की तरह सीओपी भी रहेगी।

रेलवे का टारगेट है कि यह काम मार्च 2025 तक पूरा कर लिया जाए। ओंकारेश्वर रोड रेलवे स्टेशन पर हाईलेवल के दो प्लेटफॉर्म बनाए जाएंगे। दोनों प्लेटफॉर्म 22 कोच की क्षमता वाले रहेंगे। लिफ्ट, एसी वेटिंग रूम, सामान्य वेटिंग रूम, रिटायरिंग रूम और सभी उन्नत यात्री

सुविधाएं रहेंगी। इधर, गेज कन्वर्जन के प्रोजेक्ट में रेलवे ने सनावद से ओंकारेश्वर रोड तक ट्रैक बिछाने का कार्य पूरा कर लिया है। अब इस हिस्से में जो काम बचे हैं, उन्हें रेलवे तेजी से पूरा कर रहा है। इस हिस्से में 15 जुलाई को सीआरएस इंस्पेक्शन होगा। सीनियर पीआरओ प्रदीप शर्मा ने कहा कि सीआरएस इंस्पेक्शन के बाद ओंकारेश्वर रोड रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधाएं तेजी से विकसित की जाएंगी। ये सुविधाएं पूरी होने के बाद रेल प्रशासन इस हिस्से में ट्रेन चलाने का निर्णय लेगा।

ट्रेजर फैंटेसी में चोरी

रायपुर गए थे दंपत्ति, पुलिस सीसीटीवी से चोरों को ढूंढ रही

इंदौर (नप्र)। इंदौर में राऊ के नजदीक ट्रेजर फैंटेसी के घर में लाखों की चोरी हो गई। यहां रहने वाले दंपती रिश्तेदार के यहां रायपुर गए थे। इस बीच चोरों ने सूना घर देखकर हाथ साफ कर दिया। शिकायत मिलने पर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। पुलिस आसपास के सीसीटीवी भी खंगाल रही है। चोरी का पता सबसे पहले पड़ोसी को लगा। उन्होंने फोन पर पूरा घटनाक्रम बताया। राऊ पुलिस ने अर्पित शुक्ला की शिकायत पर फूफा अनिल कुमार दुबे के यहां हुई चोरी का केस दर्ज किया है। अर्पित ने बताया कि घर का पूरा सामान बिखरा पड़ा था। अलमारी टूटी थी। चोर यहां से चार टॉप्स, सोने की अंगूठी, कान के डायमंड के बाले, चांदी की थालियां, चांदी की 4 जोड़ पायल, चांदी की 10 जोड़ बिछिया, चांदी के दीपक और 1 लाख 60 हजार रुपए नकदी गायब थे। अर्पित ने पुलिस को बताया कि उसके फूफा अनिल दुबे 8 जून को घर पर ताला लगाकर रायपुर गए थे। उन्होंने चाबी पड़ोसी को दी थी। इसके अलावा उनके यहां माली भी नियमित रूप से आता था। पुलिस सीसीटीवी के आधार पर आरोपियों की तलाश कर रही है।

जनसंख्या नियंत्रण कानून की मांग को लेकर प्रदर्शन

सभी समाजों पर समान रूप से लागू हो;140 करोड़ से ज्यादा आबादी चिंताजनक

इंदौर (नप्र)। देश में असंतुलित और लगातार बढ़ रही जनसंख्या को लेकर गुरुवार को जनसंख्या समाधान फाउण्डेशन द्वारा देशभर में आज प्रदर्शन किया जा रहा है। इसी कड़ी में इंदौर कलेक्टोरेट पर भी फाउण्डेशन के लोगों ने प्रदर्शन किया है। लोगों की मांग है कि देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू हो। 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस पर सर्व ब्राह्मण परशुराम सेना के पूर्वी क्षेत्र के अध्यक्ष राजेश तिवारी, राजपूत समाज के सुरेंद्रसिंह राठौर सहित कई समाज के लोग इसे लेकर कलेक्टोरेट पहुंचे। अध्यक्ष राजेश तिवारी ने बताया कि फाउण्डेशन में सभी धर्मों व समाज के लोग हैं। उन्होंने कहा कि आज देश की जनसंख्या 140 करोड़ से ज्यादा हो गई है। दूसरी ओर संसाधन कम हो गए हैं। हम चाहते हैं कि देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून लागू हो। यह कानून वर्गों, समाजों में समान रूप से लागू हो। इससे जनसंख्या नियंत्रण का समाधान हो सकेगा। फाउण्डेशन ने प्रियंका चौरसिया (डिप्टी कलेक्टर) को ज्ञापन सौंपा और मांग की कि हमारी बात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक पहुंचाई जाए।

इंदौर में शादीशुदा महिला से रेप

शादी का झांसा देकर बनाए संबंध फिर कर दिया इनकार

इंदौर (नप्र)। एरोड्रम इलाके में रहने वाली एक महिला ने उसके पूर्व पड़ोसी के खिलाफ रेप का मामला दर्ज कराया है। आरोपी पिछले एक साल से पति को छोड़ने की बात पर महिला का शोषण कर रहा था। महिला ने उससे शादी की बात की तो आरोपी ने जान से मारने की धमकी दी। एरोड्रम पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक 21 साल की पीड़िता ने बताया कि मई 2023 में वह हम्माल कॉलोनी में किराए से रहने गई थी। यहां उसकी पहचान शुभम यादव से हुई। शुभम ने पहचान बढ़ाने के बाद एक दिन घर बुलाया और कहा कि वह उससे शादी कर लेगा। अपने पति को छोड़ दे। महिला उसकी बातों में आ गई। इसके बाद शुभम ने शादी की बात करते हुए उससे संबंध बनाए। महिला ने जब शादी का कहा तो आरोपी ने जान से मारने की धमकी दी।महिला ने कॉलोनी छोड़ दी और अन्य जगह रहने चली गई। इसके बाद भी शुभम महिला से संबंध बनाता रहा। लेकिन शादी नहीं की। शादी का दबाव बनाने पर उसने महिला से विवाद कर उसे इनकार करते हुए जान से मारने की धमकी दी। इस पर पीड़िता ने थाने में शिकायत की, जिसके बाद पुलिस ने केस दर्ज किया है।

इंदौर की चाइल्ड स्पेशलिस्ट दहेज के लिए प्रताड़ित

प्रीमैच्योर बेटा हुआ तो इलाज कराने से किया इनकार, दूसरी महिला से संबंध के चलते की मारपीट

इंदौर (नप्र)। इंदौर की हीरानगर पुलिस ने निजी अस्पताल की चाइल्ड स्पेशलिस्ट महिला डॉक्टर की शिकायत पर राजस्थान के अलवर में रहने वाले उसके पति, ससुर और ननद के खिलाफ मारपीट और 50 लाख रुपए का दहेज मांगने के मामले में केस दर्ज किया है। पीड़िता ने मासूम बेटे का इलाज नहीं कराने और पति की दूसरी महिला से दोस्ती के चलते मारपीट का आरोप लगाया है। हीरानगर थाने में डॉक्टर श्रुति सक्सेना अपने पति डॉ. अभिषेक सक्सेना, उनके पिता डॉ. राजकुमार सक्सेना और ननद आंचल खंडेलवाल के खिलाफ शिकायत की है। श्रुति ने अपनी शिकायत में पति और ससुर पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं।

पीड़ित महिला डॉक्टर ने पुलिस में शिकायत में जो बताया

श्रुति ने बताया है कि, मेरी शादी राजस्थान के अलवर में रहने वाले अभिषेक सक्सेना से 21 जुलाई 2018 को हुई। अभिषेक के दादा का स्वास्थ्य खराब होने के कारण शादी अलवर में ही हुई। शादी के समय अभिषेक और ससुराल के लोगों ने जो भी डिमांड की उसे पूरा किया गया। इसमें 20 तोला सोने के जेवर, 25 लाख नगद, गृहस्थी के सामान के पैसे अलग से दिए गए। अभिषेक, उसके पिता राजकुमार और बहन आंचल आए दिन बेटे को लेकर ताना मारते थे। ननद शादीशुदा होने के बाद भी अपने मायके में ही ज्यादा समय बिताती थी। पति को भड़काती। मुझे ताना देती कि बोलने के बाद भी शादी में बरातियों को चांदी के गिलास नहीं दिए। पति कहते कि पिता ने आंचल को कार दी है। तुम भी पिता से कार मांगो। अभिषेक ने एक दिन कहा कि उसे क्लिनिक खोलना है, 50 लाख की आवश्यकता है। माता-पिता से बात करो। इस बात से इनकार करने पर अभिषेक गालियां देने लगा।

9 मार्च 2024 को अभिषेक के दूसरी महिला से संबंध होने की जानकारी लगने पर हम दोनों के बीच झगड़ा हुआ। अभिषेक ने मुझे घर से निकाल दिया। उस समय मेरी मां भी वहां आई हुई थी। अभिषेक ने कहा कि वापस आई तो ठीक नहीं होगा। इसके बाद मैं बेटे को लेकर मां के साथ इंदौर आ गई। कई बार अभिषेक और ससुर राजकुमार से बात करने की कोशिश की। लेकिन उन्होंने बात नहीं की। प्रताड़ना से परेशान होकर थाने में शिकायत की।

छात्रा के भाई की शादी में पत्नी को पीटा

पत्नी छोड़कर गई तो छात्रा को करने लगा परेशान, 50 हजार मांगे

इंदौर (नप्र)। इंदौर की राऊ पुलिस ने एक छात्रा की शिकायत पर उसके परिचित युवक के खिलाफ छेड़छाड़ करने रास्ता रोकने और 50 हजार की डिमांड करने के मामले में केस दर्ज किया है। आरोपी करीब 6 माह से छात्रा पर पत्नी के छोड़ जाने की बात का आरोप लगाते हुए छेड़छाड़ कर रहा था। राऊ पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक रंगवासा में रहने वाली 25 साल की छात्रा ने बताया कि दिसंबर 2023 को उसके भाई की शादी थी। इसमें राजेश पुत्र काशीराम जमरे निवासी कमल नगर को परिवार के साथ बुलाया था। राजेश पत्नी रेखा को लेकर शादी में आया। शादी में शराब के नशे में उससे विवाद किया। मारपीट से नाराज होकर पत्नी रेखा उसे छोड़कर मायके चली गई। तब से राजेश पीड़ित छात्रा को परेशान करने लगा। छात्रा के मुताबिक वह आए दिन पीछा करने के साथ अश्लील कमेंट करता रहता है। यह बात माता-पिता को बताई उन्होंने राजेश को समझाया। लेकिन आरोपी नहीं माना और समाजिक लोगों के सामने भी अपशब्द कहे।

5 दिन पहले करीब 6 जुलाई को एसबीआई बैंक के यहां से छात्रा पैदल जा रही थी। तब राजेश ने उसका पीछा किया ओर अश्लील कमेंट किये। कहने लगा कि बात नहीं करेगी तो बदनाम कर दूंगा। जान से मार दूंगा। तुम कहीं की नही रहोगी। ऐसी हालत कर दूंगा कि तुम और तुम्हारा परिवार मेरे नाम से सुसाइड कर लोगे। डर के चलते तेजी से आगे बढ़ी तो राजेश ने कहा कि तुम चाहती हो कि तुम्हारा पीछा छोड़ दूं तो 50 हजार रुपए दे दो। अगर नहीं दिए तो कल फिर आउंगा। पीड़िता ने

बताया कि वह जल्दी में घर पहुंची और परिवार को जानकारी दी। और परिवार के साथ जाकर पुलिस से शिकायत की।

शादीशुदा महिला को परिचित ने मारा थप्पड़

बाणगंगा में सड़क पर बात नहीं करने को लेकर शादीशुदा महिला को उसके परिचित ने थप्पड़ मार दिया। पुलिस ने छेड़छाड़ ओर मारपीट की धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक 28 साल की महिला की शिकायत पर देवेन्द्र मोहने के खिलाफ केस दर्ज किया गया। महिला ने बताया कि वह 2 साल पहले देवेन्द्र से बात होती थी। लेकिन बाद में बंद कर दी। बुधवार दोपहर बेटी को स्कूल छोड़ने जा रही थी। देवेन्द्र उस समय पीछा करते हुए आया और हाथ पकड़कर थप्पड़ जड़ दिया। उसने धमकाकर कहा कि मेरे साथ चलो। इसके बाद बेटी को मारने की धमकी देने लगा। बाद में पीड़िता अपनी बेटी को स्कूल छोड़ने के बजाय सीधे घर लेकर आ गई। पति को कॉल कर जानकारी दी और केस दर्ज कराया।

सातवीं कक्षा की छात्रा से छेड़छाड़ के बाद मारपीट

एरोड्रम में सातवीं कक्षा की छात्रा के साथ छेड़छाड़ के बाद मारपीट करने का मामला सामने आया है। पुलिस की जानकारी के मुताबिक 14 साल की छात्रा ने बताया कि तीन-चार दिन से उसकी बिल्डिंग में रहने वाला एक नाबालिग उसे घूर रहा था। बुधवार रात करीब 10 बजे वह अपनी मम्मी के साथ टहल रही थी। वह पीछे की तरफ से आ रही थी। तभी वह अचानक से सामने से आया। उसने घूरकर देखा और मेरा हाथ पकड़ लिया। छात्रा ने बताया कि वह चिल्लाई तो लड़का वहां से भाग गया। मां ने गार्ड से लड़के के बारे में पूछा और उसके परिवार को बुलाया। उन्होंने मां और पापा के साथ मारपीट की। वहीं छात्रा से भी झूमाझटकी की। बाद में वहीं के लोगों ने बचाया। पुलिस को जानकारी देकर थाने में एफआईआर दर्ज कराई।

संपादकीय

बाबा को क्लीन चिट के मायने

जैसी कि आशंका थी, हाथरस जिले के फुलरई में बाबा नारायण साकार हरि के आश्रम में अंध भक्ति के चलते मची भगदड़ में 123 भक्तों के बेमौत मारे जाने की घटना के लिए एसआईटी जांच रिपोर्ट में अफसरों को ही जिम्मेदार ठहराया गया है, जबकि इन सबके लिए मुख्य रूप से जवाबदेह बाबा को क्लीनचिट दे दी गई है। रिपोर्ट में सीधे तौर पर यह साबित करने की कोशिश है कि जो कुछ हुआ वह बाबा के प्रबंधकों और स्थानीय प्रशासन की लापरवाही और गैर जिम्मेदाराना रवैए के कारण हुआ। पूरी रिपोर्ट में भक्तों की आस्था के केन्द्र बाबा का कोई जिक्र नहीं है, जिसकी चरणों की रज माथे से लगाने के चक्कर में यह भीषण हादसा हुआ था। इस बीच मीडिया चिल्ला चिल्लाकर कह रहा है कि सरकार बाबा पर हाथ डालने से क्यों बच रही है? क्या इसके पीछे बाबा से कोई राजनीतिक डील हुई है? राज्य सरकार की इसी मंशा को भांपकर बसपा सुप्रीमो मायावती ने कहा कि इस भीषण हादसे में भोले बाबा को क्लीन चिट देना कई सवाल खड़े करता है। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट से लगता है कि एसआईटी ने हाथरस कांड को बहुत गंभीरता से नहीं लिया। मायावती ने जांच रिपोर्ट को राजनीति से प्रेरित भी बताया। साथ ही यह भी कहा कि पूरे हादसे पर बाबा की चुप्पी चिंता की बात है। गौरतलब है आश्रम में हुए इस हादसे की एसआईटी से जांच रिपोर्ट मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 24 घंटे के भीतर मांगी थी। लेकिन एसआईटी को जांच में 6 दिन लग गए। रिपोर्ट के बारे में जो जानकारियां सामने आई हैं, उसके मुताबिक इस 300 पन्नों की जांच रिपोर्ट में जिम्मेदार ठहराना तो दूर भोले बाबा का नाम तक नहीं है। योगी सरकार ने इस रिपोर्ट के आधार पर सिकंदरामऊ के एसडीएम, सीओ और तहसीलदार समेत छह लोगों को सस्पेंड कर दिया है। इनमें चौकी इंचार्ज कचौरा और चौकी इंचार्ज पोरा भी शामिल हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि आयोजक मुख्य जिम्मेदार हैं। स्थानीय प्रशासन की भी जवाबदेही तय की गई है। दो सदस्यीय जांच समिति ने कहा कि हादसे के पीछे साजिश से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसकी गहन जांच की जरूरत है। आयोजकों की लापरवाही से हाथरस दुर्घटना हुई है। भीड़ को आमंत्रण देकर पर्याप्त इंतज़ाम नहीं किया गया। स्थानीय पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों ने आयोजन को गंभीरता से नहीं लिया। साथ ही वरिष्ठ अधिकारियों को समुचित जानकारी नहीं दी। उप जिला मजिस्ट्रेट सिकन्दराराऊ द्वारा बिना कार्यक्रम स्थल का मुआयना किये आयोजन की अनुमति प्रदान कर दी गई और वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत भी नहीं कराया। इसी तरह सत्संग आयोजकों को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा गया है कि आयोजकों ने तथ्यों को छिपाकर कार्यक्रम के आयोजन की अनुमति ली। इसके लिए लागू शर्तों का अनुपालन नहीं किया गया। आयोजकों द्वारा अप्रत्याशित भीड़ को आमंत्रित कर पर्याप्त एवं सुचारु व्यवस्था नहीं की गई। इससे अव्यवस्था फैली। इस एसआईटी में एसआईटी में आगरा जोन की अपर पुलिस महानिदेशक (एडीजी) अनुपम कुलश्रेष्ठ और अलीगढ़ मंडल आयुक्त शामिल थे। इसके अलावा इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश बृजेश कुमार श्रीवास्तव, पूर्व आईपीएस हेमंत राव और पूर्व आईपीएस भवेश कुमार सिंह की अध्यक्षता में एक अलग न्यायिक आयोग भी हाथरस भगदड़ मामले की जांच कर रहा है। जांच रिपोर्ट आने के बाद यह सवाल उठ रहा है कि क्या बाबा और योगी सरकार के बीच कोई 'डील' हो गई है? क्योंकि बाबा के यूपी में करीब 50 लाख अनुयायी बताए जाते हैं और राज्य में जल्दी ही 10 विधानसभा सीटों पर उपचुनाव होने हैं। खास बात यह है कि बाबा दलित जाटव समाज से आते हैं और मायावती का कोर वोट बैंक भी यही है।

नजरिया

डॉ. सुधीर सक्सेना

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

डेक्कन डायरी- लाम की मानिंद है सियासत

बहरहाल, राजनीति आज पूर्णकालिक टास्क है। वह फुल टाइम जॉब है; चुनौती, जोखिम और अनिश्चितता से भरा हुआ। वह 'खेलत में को का करे गुसैंया' मार्का खेल नहीं है। राजनीति की गाथा में कोई 'शांति- पर्व' नहीं होता और यदि होता भी है तो उसमें भी युद्ध की तैयारियां जारी रखनी होती है। चुनाव 24 के नतीजे इसके परिचायक है। दक्षिण भारत के राज्य के चुनावी नतिजों की बात पर तो वे इन अवधारणाओं की पुष्टि करते हैं। छह दक्षिणी राज्यों में अन्य को तो छोड़िये, धुर-दक्षिण में तमिलनाडु और केरल में भारतीय जनता पार्टी ने तगड़ा होमवर्क किया और उसे इसका लाभ मिला। तेलंगाना में रेवंत की युक्तियां रंग लायी। आंध्र प्रदेश में चतुरसुजान चंद्रबाबू नायडू ने गठबंधन की जरूरत को बुझा। उनकी 'त्रोइका' रणनीति सफल रही। वह अभूतपूर्व बहुमत से सत्ता में लौट आये।

राजनीति निर्मम होती है। वह किसी का लिहाज नहीं करती। हिन्दी - कवि सुदामा पांडेय की काव्य-पंक्तियों को किंचित फेरबदल के साथ कहें तो सियासत समूचा आदमी चाहती है, अपनी खुराक के लिये। वह किसी को भी खता पर बख्शती नहीं। कोई नहीं जानता कि राजनीति की भूरी-भूरी खाक-धूल कब किसको ढंक लेगी और कब अंधड़ किस मर्तबान का ढक्कन उघाड़ देगा। आज संसोपा, प्रसोपा, स्वतंत्र पार्टी, शेकाप, अगप आदि को कौन याद करता है। किसी भी बैनर या विचार को समय के साथ प्रासंगिक बनाये रखना एक दुष्कर काज है। थिंक टैंकों का हश्र भी हमने देखा है। आज समाजवादी विचारों के कितने पुरोधा शेष हैं? सनातनी सेक्यूलरवाद की जितनी लानत-मलामत कर सकते हैं, कर रहे हैं; थिंक टैंक और सत्ता-शिविर की बात करें तो गोविंदाचार्य की सुध आज कौन लेता है। इन्हीं संदर्भों में गांधी-दर्शन की अक्षुणता और प्रासंगिकता का मूल्य और महत्व समझ में आता है और यह भी कि बापू क्यों विश्व के लिये महत्वपूर्ण और आशा-द्वीप हैं।

बहरहाल, राजनीति आज पूर्णकालिक टास्क है। वह फुल टाइम जॉब है; चुनौती, जोखिम और अनिश्चितता से भरा हुआ। वह 'खेलत में को का करे गुसैंया' मार्का खेल नहीं है। राजनीति की गाथा में कोई 'शांति- पर्व' नहीं होता और यदि होता भी है तो उसमें भी युद्ध की तैयारियां जारी रखनी होती है। चुनाव 24 के नतीजे इसके परिचायक है। दक्षिण भारत के राज्य के चुनावी नतिजों की बात पर तो वे इन अवधारणाओं की पुष्टि करते हैं। छह दक्षिणी राज्यों में अन्य को तो छोड़िये, धुर-दक्षिण में तमिलनाडु और केरल में भारतीय जनता पार्टी ने तगड़ा होमवर्क किया और उसे इसका लाभ मिला। तेलंगाना में रेवंत की युक्तियां रंग लायी। आंध्र प्रदेश में चतुरसुजान चंद्रबाबू नायडू ने गठबंधन की जरूरत को बुझा। उनकी 'त्रोइका' रणनीति सफल रही। वह अभूतपूर्व बहुमत से सत्ता में लौट आये।

द्रविड़ राजनीति और द्रविड़ मॉडेल के कारण चर्चित तमिलनाडु के परिणामों की बात करें तो बड़ी दिलचस्प तस्वीर उभरती है। तमिलनाडु की राजनीति अर्से से दो पाटों की राजनीति है। इन दो पाटों के बीच औरों की तो छोड़िये, एक वक्त की अत्यंत शक्तिशाली और पैन-इंडियन पार्टी कांग्रेस भी पिस गयी। तमिलनाडु में सत्ता द्रमुक अथवा अन्नाद्रमुक की चेरी रही है और उन्हें चुनौती देना दूर की कौड़ी है। और ऊपर से तुर्रा यह कि अगर आपको तमिलनाडु के राजनीतिक परिदृश्य में बने रहना है तो आपको दोनों द्रविड़ पार्टियों में से किसी एक का दामन थामन होगा। कांग्रेस ने इस भेद और वक्त के तकाजे को बूझा। वह करिश्माई स्तालिन की पार्टी से जुड़ी। नतीजा सामने है। स्तालिन विरोधियों का सूपड़ा साफ हो गया। द्रमुकनीत गठबंधन की आंधी में तमिलनाडु से कांग्रेस के प्रत्याशी तो जीते ही, सटे हुए छोटे-से सूबे पुद्दुचेरि से भी उसके निवर्तमान सांसद वैथिलिंगम ने फिर से जीत का परचम लहराया।

तमिलनाडु की ध्रुवीकृत राजनीति में अन्नाद्रमुक का वोट-प्रतिशत तो बढ़ा, लेकिन वह अंक तालिका में जगह नहीं बना सकी। वह सिफर पर अटकी। यूं तो सिफर पर बीजेपी भी अटकी, अलबत्ता आश्चर्यजनक तौर पर उसने आगे के लिए जमीन तैयार कर ली। माना जा सकता है कि तमिलनाडु में बीजेपी की इस असफलता में दूरगामी सफलता की संभावना छिपी है। पार्टी की प्रांतीय ईकाई के मुखिया अन्नामलै कोयंबटूर से चुनाव हार गये, मगर उनके अथक प्रयासों और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लगातार दौरों ने पूरे प्रदेश के मतदाताओं को चुनावी रण में बीजेपी की उपस्थिति का एहसास करा दिया। यद्यपि, बीजेपी मतों की दौड़ में द्रमुक, अन्ना द्रमुक और कांग्रेस से बहुत पीछे है, किन्तु उसे उच्च मध्यम वर्ग और पिछड़ों का अच्छा समर्थन मिला। मुस्लिम मतदाताओं ने उसे सिरे से नकारा, किंतु ईसाई मतदाताओं के पंचमांश से कुछ कम मतदाताओं ने उसके उम्मीदवारों को वोट दिए। तमिलनाडु में चुनाव 24 के नतीजों से अगर कोई खीझा हुआ है तो वह है अन्ना द्रमुक। द्रमुक-कांग्रेस और उनके छुटके साथियों की तो बल्ले-बल्ले है। वहीं अन्नाद्रमुक, जो कल तक बीजेपी की सहयोगी थी, तमिलनाडु में पांव टिकाये रखने की युक्तियां तलाश रही है। तमिलनाडु में सन 2026: में विधानसभा के लिए चुनाव होंगे। यह चुनाव अमाद्रमुक के लिए अग्निपरीक्षा होंगे। अन्नाद्रमुक के महासचिव ई. पलनीसामी पूर्व मंत्री एसपी रतुमणि की इस राय से कतई इतेफाक नहीं रखते कि यदि अन्नाद्रमुक और बीजेपी का गठबंधन कायम रहता तो वह 35 से 40 सीटें जीत सकता था। वह वीके शशिकला और पनीरसेल्वम के भिन्न धड़ों में एकता को भी महत्व नहीं देते। ओमालूर में बैठक के बाद उन्होंने दो टूक कहा कि सन 2026 के असेंबली चुनाव में अन्नाद्रमुक बीजेपी से कोई गठजोड़ नहीं करेगी और चुनाव मैदान में अकेली ही उतरेगी। इसमें शक नहीं कि अन्ना द्रमुक के लिए आगामी कल की राह पुरखार है। पीएमके और एनटीके जैसी छोटी पार्टियां विफल रहीं। राज्यपाल पद त्याग कर चेन्नै दक्षिण से बतौर बीजेपी प्रत्याशी चुनाव मैदान में उतरी सुश्री सौन्दर्यराजन भी पराभूत हुई। उधर द्रमुक की सहयोगी कांग्रेस ने भी दस की दस सीटें जीतीं। वाम दल दो संसदीय क्षेत्रों में सफल रहे। एमडीएमके, वीसीके तो जीते ही, आयूएमएल ने रामनाथपुरम में अपना कब्जा कायम रखा।

तमिलनाडु में बीजेपी के प्रांतीय अध्यक्ष के. अन्नामलै तमिलनाडु के भीतर और बाहर अर्से से सुर्खियों में हैं। दिलचस्प तौर पर वह जेरे-बहस भी है। पूर्व मुख्यमंत्री और अन्ना द्रमुक नेत्री जयललिता की तारीफ के लिये उनकी नुक्ताची भी हो रही है। उल्लेखनीय है कि अन्नामलै ने जयललिता को हिन्दुत्व की नेता की संज्ञा दी। अतीत के पन्ने पलटें तो सन 1991-96 और सन् 2001-06 के अपने मुख्य मंत्रित्वकाल में जयललिता ने कई ऐसे फैसले लिए थे, जो भाजपा को रास आये। दिसंबर, सन 92 में बाबरी मस्जिद के ध्वंस के बाद लालकृष्ण आडवाणी ने चेन्नै में प्रेस वार्ता में राष्ट्रीय एकीकरण परिषद में सुश्री जयललिता के नवंबर में दिये भाषण का उल्लेख किया था। और उसे बीजेपी और अन्नाद्रमुक के दरम्यां सहयोग और सद्भाव की नींव निरूपित किया था। गौरतलब है कि करीब एक तिमाही बाद जयललिता ने कांग्रेस से अपने रिश्ते तोड़ लिये थे। कांग्रेस छोड़ कर अन्नाद्रमुक में शामिल तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष एसआर बालासुब्रमण्यम, जिन्हें बाद में पार्टी ने राज्यसभा में भेजा, की माने तो सुश्री जयललिता अयोध्या में कार सेवा की हिमायती थीं। एस. तिरुनवुक्कर सर ने अन्ना द्रमुक नेत्री पर द्रविड़ आंदोलन से छिटकने का आरोप भी लगाया था। दस साल बाद जयललिता को पत्रकारों ने यह कहते हुए भी सुना था कि यदि हम भारत में भगवान राम का मंदिर नहीं बना सकते तो भला और कहां बनायेंगे। यह किसी से छिपा नहीं है कि बीजेपी के तत्कालीन शीर्ष नेतृत्व के मन में द्रविड़ राज्य की इस ब्राह्मण मुख्यमंत्री के प्रति परोक्ष आसक्ति का भाव था। वह धर्मान्तरण पर पाबंदी के पक्ष में थी और बलि प्रथा की विरोधी। मंदिरों में निर्धनों के लिए अन्नदानम स्कीम से उनका विशेष अनुराग था। बाद में ऐसा अवसर भी आया, जब उनकी पार्टी ने अयोध्या, काशी और मथुरा के मुद्दों को बीस साल के लिये ठंडे बस्ते में डालने और बेरोजगारी उन्मूलन तथा बिजली और पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर ध्यान देने की बात कही।

उपरोक्त संदर्भों में बीजेपी और अन्ना द्रमुक के रिश्तों को सहज ही समझा जा सकता है। अन्नाद्रमुक और बीजेपी का अलग होना दोनों ही दलों के लिए घाटे का सौदा है। लेकिन दोनों के संग-साथ के भी खतरे हैं। बीजेपी क्षेत्रीय दलों के सहारे राज्यों में पांव पसारने की राजनीति की अभ्यस्त है। तेलंगाना में बीआरएस, महाराष्ट्र में शिवसेना तथा एनसीपी, पंजाब में अकाली दल के क्षरण से उसने लाभ उठाया है। अन्नाद्रमुक उस खतरे से बचना चाहती है। अन्नाद्रमुक और बीजेपी के मेल से बीजेपी का लाभ ज्यादा है, अन्नाद्रमुक को कम। सियासत वैसे भी लाम की तरह है और चुनाव जंग। बीजेपी की खूबी यह है कि वह बारहों महिने लामबंद रहती है और किसी भी कीमत पर जंग जीतना चाहती है। उसकी दिक्कत यह है कि दक्खिनी देगचियों में उसकी दाल मनमाफिक गल नहीं रही है। विलाशक अन्नामलै नेतृत्व विहीन अन्नाद्रमुक के कार्यकर्ताओं को लुभाना चाहते हैं, लेकिन डेक्कन की राजनीति उत्तर सी ऋजुरैखिक नहीं है।

मुद्दा

डॉ. रमेश ठाकुर

सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान

बाढ़ ने उजागर की आपदा प्रबंधन की कागजी तैयारियां

बाढ़-बारिश के रोद्र रूप ने मानवजीवन को डरा दिया है। हिंदुस्तान के विभिन्न हिस्सों में व्याप्त प्रलयकारी बाढ़ से अबतक अनुमानित 600 करोड़ रूपए के नुकसान का आकंलन हुआ है। बढ़ने की और संभावनाएं हैं, आर्थिक नुकसान के अलाव जानमाल की भी क्षति लगातार हो रही है। करीब 300 से अधिक मौतें हो चुकी हैं। बाढ़ की विभिषिका से निपटने के लिए समाज आगे आया हुआ है। लेकिन बाढ़ से मचे हाहाकार को देखकर 'भारतीय आपदा प्रबंधन' ने पूरी तरह से पत्ते डाले हुए हैं। उनकी कोशिशें और राहत-बचाव के प्रयास घटना स्थलों पर हांफ रहे हैं। भयंकर बाढ़ की भयाभता ने चारों ओर कहर बरपाया हुआ है। जमीन का भूभाग पानी-पानी हुआ पड़ा है। आपदा प्रबंधन से तो कहीं अच्छा कार्य इस वक्त स्थानीय प्रशासन जैसे एसडीएम, तहसीलदार, जिला कर्मचारियों के अलावा ग्राम प्रधान और राजनैतिक कार्यकर्ता करते दिख रहे हैं। सभी ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में मोर्चा संभाला हुआ है। उनसे जो कुछ भी बन पड़ रहा है, ईमानदारी से कर रहे हैं। ऐसे में आपदा प्रबंधन अमला सफेद हाथी साबित बना हुआ है।

आपदा प्रबंधन की हमेशा की तरह इस बार भी मानसून की पहली बारिश ने पोल खोली है। जबकि, रैली सीजन का वक्त अभी शेष है। अभी आगे इससे भी ज्यादा बारिश और होने की संभावनाएं जताई जा रही हैं। लेकिन फिलहाल इतनी ही बारिश में पूरे हिंदुस्तान को जलमग्न कर दिया है। आपदा प्रबंधन के पास तैयारियों का लंबा वक्त होता है। ईमानदारी से अपना दायित्व निभाएं तो ऐसी स्थितियों से काफी हद तक निपटा जा सके। विभागीय अधिकारी-कर्मचारी तैयारियां कितनी करते हैं और कितनी गंभीरता से करते हैं? उसकी तस्वीर बाढ़ आने पर दिखती हैं। भारतीय आपदा प्रबंधन को अच्छे से ज्ञात होता है कि हिंदुस्तान अपनी अनूठी भू-जलवायु स्थितियों के कारण प्राकृतिक आपदाओं के प्रति संवेदनशील है। बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूकंप और भूस्खलन बार-बार होने वाली घटनाएं स्वाभाविक होती हैं। लगभग 60 फीसदी भ-ूभाग विभिन्न तीव्रता के भूकंपों के लिए है, 40 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र बाढ़ के लिए है, 8 फीसदी चक्रवातों के लिए और 68 प्रतिशत क्षेत्र सूखे के लिए अतिसंवेदनशील माना जाता है। ऐसे में इन जगहों पर पूर्व में की जाने वाले तैयारियां विकट समस्याओं में विफल क्यों होती हैं? इसका जवाब आपदा प्रबंधन को ऐसे वक्त देना चाहिए।

इसमें कोई दो राय नहीं, कि मानसून के दो-ढाई महीने ऐसे होते हैं जो आपदा प्रबंधन के लिए किसी चुनौती से कम नहीं होते हैं। मानसून से पूर्व करीब 10 महीनों का प्रर्याप्त समय उनके पास तैयारियों का होता है। चाहे केंद्र सरकार हो, या राज्यों की हुकूमतें, प्रबंधन विभाग को धन से लेकर जरूरत की तमाम वस्तुएं मुहैया करवाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ती, ताकि बाढ़ आपदा से उनका आपदा प्रबंधन विंग अच्छे से निपट सके। पर, अफसोस विभाग उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाता। मानसून की पहली ही बारिश में उनके तमाम कागजी प्रयासों की पोल खुल जाती है। स्थिति बिगड़ने पर बचाव-राहत कार्य में तो उनके लोग जुटते हैं, पर सिंगल व्यक्ति की भी रक्षा अपने तकनीकों के जरिए नहीं कर पाते। आपदा प्रबंधन को सरकारें मुंह मांगा बजट आवंटित करती हैं। लेकिन बावजूद इसके बाढ़ से प्रभावित लोगों को बचाने के लिए सेना, एयरफोर्स, सीआरपीफए की टुकड़ियां लगानी पड़ती हैं। सरकार के अन्य विभागों के कर्मचारियों को मोर्चा संभावना पड़ता है।

आपदा प्रबधंन को रिफार्म करने की दरकार है। विभाग को आधुनिक करके नई तकनीकों को अपनाना होगा। करीब 33 लाख वर्ग किमी क्षेत्र के भौगोलिक विस्तार एवं 140 से ज्यादा आबादी वाले भारत में शायद ही इस वक्त कोई ऐसा भाग बचा हो जहां बाढ़ या बारिश आपदा की स्थिति न उत्पन्न हुई हो। नेपाल ने बारिश का अपना सारा पानी भारत की ओर मोड़ दिया है जिससे भारत का तराई क्षेत्र और आसपास सटे जिले और गांव-कस्बे पानी से लबालब भरे हैं। उनसे निपटना जल आपदा प्रबंधन के बस का नहीं? पूर्वी बिहार में बहने वाली कोसी नदी उफान पर है। दर्जन भर जिलों को सड़क मार्ग पूरी तरह से कट गया है। बाढ़ पीड़ित लोग बमुश्किल सुरक्षित जगहों पर पनाह ले पा रहे हैं। तराई क्षेत्र के जिले पीलीभीत, लखीमपुर, बलरामपुर, बहराईच आदि जिलों के लोग जहां-तहां भाग रहे हैं। पीलीभीत में अभी हाल में बिछाया गया नया रेल टैक भी पानी से बह गया। इस बार मानसून अच्छा है। तभी, तकरीबन समूचे हिंदुस्तान में इस वक्त मूसलाधार बर्षा हो रही है जिससे उत्पन्न स्थिति ने प्रलयकारी बाढ़ में तब्दील कर दिया है जिसने इंसानी जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है।

बाढ़ से निपटने के लिए आपदा प्रबंधन की कमजोर तैयारियों निश्चित रूप से सोचने पर मजबूर करती हैं। असम, उत्तराखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश, हिमालच, पश्चिम बंगाल, बिहार जैसे 9 राज्य ऐसे हैं जो ज्यादा प्रभावित हैं। इन समस्याओं से निपटने की पहली जिम्मेदारी आपदा प्रबंधन पर होती है। लेकिन ऐसे में वहां सिर्फ कमियां ही दिख रही हैं। उनमें आपसी समन्वय में कमी, अपर्याप्त फंडिंग का रोना, सीमित सार्वजनिक भागीदारी और अपर्याप्त संसाधनों की दुहाई दे रहे हैं।

आपदा एक अचानक, विपत्ति पूर्ण घटना है, जो जीवन और संपत्ति को भारी क्षति, हानि, विनाश और तबाही में बदलती है। आपदाओं से होने वाला नुकसान अथाह है और प्रभावित क्षेत्र की मानसिक, सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। आपदाएं ऐसी घटनाएं हैं जो बहुत अधिक क्षति, विनाश और मानवीय पीड़ा पहुंचाती हैं। पर, ये आधुनिक विकसित भारत है जिसमें हम चांद पर भी पहुंच चुके हैं। पर, अफसोस इस बात का है कि बाढ़ जैसी समस्यायों से निपटने में हम अभी भी असक्षम हैं। केंद्रीय हुकूमत को गंभीरता इस मसले पर मनन-मंथन करना होगा। ताकि, भविष्य में ऐसे समस्याओं से सफल मुकाबला किया जा सके।

अभिव्यक्ति

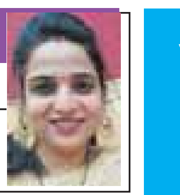

अदिति सिंह भदौरिया

लेखिका स्तंभकार हैं।

कुछ भी कह देने की आजादी के मायने

किसी भी देश की व्यवस्था की जड़े कितनी गहरी है, इस बात का पता तब चलता है, जब वहां के नागरिकों को अपनी बात रखने का अधिकार होता है। भारत देश की खूबसूरती यही है की यहाँ हम सबको अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। हम चाहे किसी भी धर्म, जाति या समुदाय से क्यों ना सबंध रखते हो, हमें अपनी बात, विचार या फिर नाराजगी जताने का भी पूरा अधिकार दिया गया है। अभिव्यक्ति की आज़ादी का अधिकार व्यापक है। भारतीय सविधान के अनुछेद 19 [1] में अभिव्यक्ति की आजादी है। साल 1963 में 16वें संशोधन के जरिए उसे विस्तारित किया गया।

क्या मात्र अभिव्यक्ति की आज़ादी हमारे विचारों के लिए ही है? क्या इसमें दूसरों के मान-सम्मान का ध्यान रखना हमारा कर्तव्य नहीं है? यहाँ बात मात्र राजनैतिक दल का एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने के बारे में ही नहीं है, बल्कि डिजिटल प्लेटफार्म जहां बिना किसी विशेष रोक-टोक के हम अपनी बात रख सकते है। इस आज़ादी का प्रयोग भी हम कई बार एक-दूसरे को अपमानित करने के साथ-साथ किसी की भी धार्मिक भावनाओं को आहात करने से नहीं चूकते। कई बार तो अफवाहों की पुष्टि किए बिना उस पर

अब हमें अभिव्यक्ति की आज़ादी मिल तो गई पर यह हम कब जान पाएंगे कि इस आजादी का असल में अर्थ क्या था? हर अधिकार किसी ना किसी कर्तव्य को अपने में समेटे हुआ होता है। बस हमें इसे पहचानने के लिए अपने विवेक का सहारा लेना पड़ता है। कई बार हम अभिव्यक्ति की आज़ादी का प्रयोग जब अपनी नाराजगी किसी राजनैतिक दल या किसी व्यक्ति विशेष के प्रति अपने रोष को प्रकट करने के लिए करते है तो जाने-अनजाने में भाषा को मर्यादित करना भूल जाते है। यह अक्सर देखा गया है की अपने रोष में हमें यह भी ध्यान नहीं रहता की हम किसी व्यक्ति का ही नहीं बल्कि कई बार भारत के विशेष पदाधिकारियों का अपमान कर देते है। तब हम यह क्यों नहीं याद रहता कि भारत का हर पद भारतीय सविधान की नींव है।

टिप्पणी करना या उस पर विश्वास कर लेना घातक बनता जा रहा है।

अब तो डिजिटल प्लेटफार्म का प्रयोग उपयोगिता के लिए कम और नकारात्मकता फैलाने के लिए ज़्यादा हो रहा है। हम यह भूल गए कि अभिव्यक्ति की आज़ादी का अधिकार सबका है। हम किसी की सोच को बाँधने का काम क्यों करने लग जाते है? क्यों चाहते है कि जो हमारे विचार हो उसमें बिना किसी तर्क -वितर्क के सामने वाले को मान लेना चाहिए या अगर हम किसी के प्रति रोष व्यक्त करते हुए किसी व्यक्ति या किसी की भी धार्मिक भावनाओं को आहत करें तो सविधान की धारा का हवाला देकर हमारे रोष को समाज द्वारा स्वीकार कर लेना चाहिए। प्रश्न यहां हम सब पर है तो उत्तर भी हमें ही ढूंढना चाहिए की क्या सही है और क्या गलत है।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

पोल खोलते गिरते, बहते, ढहते पुल

बरेली के बाजार में गिरा झुमका उतना चर्चित नहीं हुआ जितनी बिहार में गिरने वाली पुल चर्चा में आई। वैसे भी पुल और पानी के जितने रिश्ते हैं उतने ही पुलों के पोल खोलने के भी है। बिहार में लगातार गिरे पुलो से पूरे देश में बवाल मचा हुआ है लेकिन हैरतअगेज तो यह है कि नदी नाले है तो पुल है। जिन जिन पुलों का अंग्रेजों के जमाने से पानी से रिश्ता था वह आज भी सलामत है लेकिन जिन पुलो ने पानी से कभी गठ जोड नही कर ठेकेदार, इंजीनियर से किया वे गिरने में देर नहीं कर रहे है और गिरकर अपने आप को गौरवशाली समझ रहे हैं।

मॉर्निंग वॉक के दौरान अनेक मुद्दे हवा में घूमते है , लेकिन पानी में ढहते गिरते पुल की मानिंद मॉर्निंग वाकिए गिरने गिराने की कला बाजी पर बहस करने लगे ।अखबारों को आम की तरह चूस चूस कर पढ़ने वाले पं शिवनारायण जी बोले बेचारे पुल तो बेजान है ,लेकिन गिरने पर जान ले सकते हैं और बनने पर जान भी बचाते हैं ।लेकिन मात्र पुलों के गिरने पर शोक मत जताओ ।क्या-क्या गिर रहा है ,कौन-कौन गिर रहा है यह भी देखो ।

जब रुपया गिरता है तो न जाने क्या-क्या गिर जाता है और जब इंसान गिरता है तो सब कुछ गिर जाता है ।इंसान गिरे जा रहे हैं ,मानव मूल्य गिर रहे हैं ,नैतिकता ही नहीं ईमानदारी और चरित्र गिर रहा है, शिष्टाचार गिर रहा है, लोकतंत्र के पैमाने गिर रहे हैं ,जीडीपी गिर रही है,ये सब गिर रहे है तो पुल गिर कर कोई नया कीर्तिमान तो नही बना रहे है । बेचारे पुल भी क्या करे ,कई पुल तो आधे अधूरे इसलिए गिर पड़ रहे कि पूरे बनने पर किसी की जान न ले सके ।कई पुल शर्मदार नही है जो ठूंठ की तरह सालो खड़े रहते है ।

शर्मीले पुल बह निकलते है । वे बोले गिरे हुए पुलो को बेकाम मत जानो ,वे गिरकर नए पुल बनाने का रास्ता बनाते है ताकि गिरे हुए पुल की दावत से वंचित ठेकेदार, इंजीनियर,और माननीय की पौबारह हो जाए ।

पंडित जी के इस बयान पर सुनील भैया बिफर गए और बोले पूल और सत्ता दोनों की बनावट एक जैसी होती है भ्रष्टाचार का मटेरियल दोनों में एक सा रहता है इसलिए पुल और सत्ता कभी भी गिर सकती है ।और वैसे भी पुलो का अपना महत्व है। पहले पुल नदी नाले के ऊपर बनते थे जिनमें पानी बहता था लेकिन अब नदी और नालों में पानी नहीं है ,पानी की जगह पुल के नीचे सड़क दिखती है,बाजार लगता है,पार्किंग है, गुमटिया है, झुग्गियां है इसलिए पुल बेधड़क खड़े हैं ।जब टनों माल वाले भारी वाहन इन पुलो गुजरते है तो ये ताश के पत्तों की तरह ढह जाते हैं और भर भराकर गिर जाते हैं ।

पुलो के भरभराने,ढहने,गिरने,जल में समाधि लेने की तरफदारी पर स्वामी नरेंद्र जी भड़के और बोले पुल सेतु का काम करते है । सरकार से जनता को ,गांव को शहर से , आने जाने वालों को जोड़ती है ।और अब तो पुलों की जगह फ्लाय ओवर,ओवर ब्रिज बन रहे हैं । पुल से लोगो का जीवन जुड़ा है,जीवन से मौत का,मौत का मुआवजे से, मुआवजे से वोट का,वोट से सरकार का,सरकार से सर्वे और राहत राशि से संबद्ध है । यानी पुल जिंदगी का ,टूल ,भी है ।

इस पर गजराज जी गरजेऔर बोले चुनाव में अक्सर पुल बनाने की मांग की जाती है ,कई वोटर्स तो पुल न बनने पर वोट न देने की धमकी देते हैं । जब नेता पुल बनाने का वादा करता है तो वह ताबड़तोड़ में पुल बना देता है । नेताजी जानते है की पुल केसे भी बने वह वोटो को , पूल, कर लेगा ।मिले वोटों से जितने पर माननीय लोगो को उनके हाल पर ,पुश,कर देते है ।इस प्रकार पुल के लिए, पुश और पूल ,का खेला होता रहता है।और यदि तारीफ के पुल बांध दो तो वे कभी भी भरभराकर नही गिरेंगे ।

इस तरह यदि किसे बहना, ढहना ,गिरना सीखना हो तो पुलो से सीखे ताकि पुल,पोल, खोलने का सबक भी देते रहे !

दोस्ती के रिश्ते को नए अर्थ देती फिल्म

8 एएम मेट्रो

भारती पंडित

समीक्षक

दोस्ती और प्रेम दोनों ही मानव का स्वभाव है जो खालिस भावनाओं से ही संचालित होते हैं। सच्ची दोस्ती या प्रेम धर्म, जाति, लिंग कुछ नहीं देखते मगर हमारे समाज में दोस्ती और प्रेम दोनों ही के लिए बड़े मानक तय किए हुए हैं, आज आधुनिकता के इस युग में भी हम अन्य जाति या धर्म में प्रेम को मान्यता नहीं देते, दोस्ती में तो लिंग भी तय है, समान लिंग वाले व्यक्ति ही दोस्त हो सकते हैं, विपरीत लिंग में दोस्ती भी मान्य नहीं है। और फिर यदि यह दोस्ती किसी विवाहित स्त्री-पुरुष में हो रही हो तब तो नैतिकता एकदम खतरे में पड़ जाती है और समाज के ठेकेदार बेचैन हो जाते हैं। नैतिकता का यह भ्रम हमारे अंदर भी इस कदर भर दिया जाता है कि निस्वार्थ दोस्ती में भी हम अपने अंदर ग्लानि और अपराधबोध भरे जीते रहते हैं।

8 ए.एम. मेट्रो ऐसी ही खूबसूरत सी फिल्म है जो एक स्त्री और एक पुरुष की (विशुद्ध) मित्रता को लेकर बनाई गई है। नांदेड़ में रहने वाली 29 साल की इरावती अपने पति और दो बच्चों के साथ जीवन बिता रही है। ठीक वैसा ही जीवन जैसा कि हर भारतीय स्त्री का होता है। सुबह की भागदौड़ के बाद वह फ़िल्टर कॉफी की खुशबू और भीने से अहसास के साथ अपने लिए कुछ समय चुराकर कुछ कविताएँ लिखकर अपने जीवन की सार्थकता को महसूस करना चाहती है। इरावती के अपने दर्द हैं, अपने डर है, टूटे सपनों की कसक है और ये सब मिलकर उसे अक्सर विचलित करते रहते हैं।

इरावती की बहन गर्भवती है और उसकी तबीयत खराब होने के कारण उसे अचानक हैदराबाद जाना पड़ता है। बचपन के कुछ डर ऐसे हैं कि ट्रेन देखते ही इरावती को पैनिक अटैक आ जाता है... अकेले हैदराबाद जाते समय वह बहुत घबराई हुई है पर अकेले जाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

हैदराबाद जाने के बाद उसे समझ में आता है कि अस्पताल जल्दी और कम समय में पहुँचने के लिए मेट्रो ही एकमात्र साधन है। अपने डर से जूझती इरावती मेट्रो स्टेशन पहुँचती है और उसे ट्रेन देखकर चक्कर आ जाते

है। उसे संभालता है बैंक में कार्यरत प्रीतम... दोनों की पहचान होती है, दोनों के आने-जाने का समय एक ही है तो दोस्ती गहराने लगती है। दोनों फ़िल्टर कॉफी से लेकर पुस्तकों तक हर विषय पर बात करते हैं, प्रीतम भी पुस्तकों का शौकीन है, इरावती के लिखे को पढ़ना चाहता है, उसकी सराहना करता है...इरावती को आज तक किसी ने इतनी गंभीरता से लिया ही नहीं होता। प्रीतम के जीवन के अपने दर्द है जिन्हें वह इरावती की मित्रता से भुलाना चाहता है।

इरावती और प्रीतम की निकटता बढ़ती जाती है, प्रीतम का साथ उसे अपने आसपास की दुनिया को समझने और खुद के अंदर गहराई से झाँकने का मौका देता है। जीवन इतना सुंदर भी हो सकता है इरावती को अब महसूस होता है। इरावती की बहन उसकी इस गहराती दोस्ती को लेकर उसे आगाह करती है।

मेरा अपना मानना यही है कि यदि लड़के-लड़कियों या स्त्री-पुरुषों की आपसी दोस्ती को स्वस्थ तरीके से लिया जाए, इस दोस्ती को फलने-फूलने दिया जाए, नैतिकता का इतना हौआ न बनाया जाए तो सामाजिक और वैवाहिक जीवन इससे कहीं बेहतर होगा, चूँकि वे एक-दूसरी की जरूरतों को समझेंगे और यह समझ अपने पार्टनर को समझने में भी काम आएगी।

फिल्म का एक खूबसूरत दृश्य है इरावती का जन्मदिन है और वह प्रीतम के साथ हैदराबाद देखने गई है, इरावती का पति सरप्राइज़ देने के लिए अस्पताल में उससे मिलने आता है पर इरावती काफी देर से आती है। पति को वहाँ देखकर इरावती अपराधबोध से भर जाती है मगर पति उस पर न केवल विश्वास जताता है वरन जन्मदिन का उपहार भी भेंट करता है...दोनों साथ फ़िल्टर कॉफी पीते हैं और पति वापस लौट जाता है।

प्रीतम अपने जीवन को जैसा दिखा रहा होता है, वैसा होता नहीं है। वास्तव में इरावती का मिलना उसके लिए जीवनदायी शक्ति सा होता । एक दिन प्रीतम इरावती के आग्रह पर उसे अपने घर ले जाता है, वहाँ गलती से वे एक-दूसरे को स्पर्श कर बैठते हैं (इरावती के सीढ़ी से फिसलने पर) और दोनों फिर अपराध बोध से ग्रस्त हो जाते हैं।

हमारे यहाँ एक-दूसरे के स्पर्श को भी नैतिकता के दायरे में कस दिया जाता है जबकि स्पर्श हरेक के जीवन के महती जरूरत है। पर हमारे यहाँ हाथ मिलाना, गले मिलना, पीठ थपथपाना जैसी सहज अभिव्यक्तियाँ भी या तो निषेध है या हम खुद ही असहज महसूस करने लगे हैं जबकि मनोचिकित्सा के क्षेत्र में हुए शोध भी कहते हैं कि स्निग्ध स्पर्श मनुष्य की कई बीमारियों की दवा है।

बहरहाल इरावती की बहन की प्रसूति होती है और इसी द्वंद्व के चलते इरावती प्रीतम से जीवन में फिर कभी न मिलने का वादा लेकर विदा होती है। पर वास्तव में प्रीतम के साथ ने उसका जीवन बदल दिया होता है, जिसे वह लगातार महसूस करती है...ढेर सारी कविताएँ लिखती है जो पुस्तक के रूप में आती हैं।

फ़िल्म का अंत ऐसा धचका देता है जो आपने सोचा भी न हो....बहुत ही मार्मिक है और जीवन की कड़वी सच्चाई के साथ रूबरू करवाता है।

अभिनय की बात करें तो इरावती की भूमिका में सैयामी खेर और प्रीतम की भूमिका में गुलशन देवाह बेहतरीन रहे हैं। दोनों को हमने हिन्दी और मराठी धारावाहिकों में खूब देखा है। उमेश कामत इरावती के पति की भूमिका में हैं, वे प्रतिभाशाली अभिनेता हैं मगर उनके लिए इस भूमिका में कुछ खास करने को था नहीं, जितना था, बेहतर । फिल्म चूंकि घटना और संवाद प्रधान है अतः उसी पर सारा ध्यान बना हुआ है। पार्श्व संगीत अच्छा है, गुलज़ार की गज़लों का अच्छा उपयोग किया गया है। है फिकर, घूमिए और फिर से दिल टूटा गीत अच्छे बन पड़े हैं। निर्देशन शानदार है, संवाद एकदम ताज़े और मुलायम से अहसास वाले हैं। यह फिल्म आप प्राइम वीडियो पर देख सकते हैं।

गप्पे हैं, गप्पो का क्या?

वक्रोक्ति

सुरेश उपाध्याय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

सच हो - झूठ हो, कल्पना हो- यथार्थ हो, जो भी हो- गप्प तो गप्प है. दो में हो- समूह में हो, गप्प का अपना अलग ही आनंद है. घर में हो, बाग में हो, चौराहे पे हो, चौपाल पर हो या शैक्षणिक संस्थाओ के मैदान में हो, गप्प का स्वरुप अलग अलग हो सकता है लेकिन इसके रस का मजा एक जैसा हो सकता है. गप्प का मजमा सायास भी हो सकता है और अनायास भी. सायास और अनायास गप्प के मजमे में वही फर्क होता है जो कृत्रिम (आर्टिफिसिअल) और प्राकृतिक (नेचरल) में होता है - जैसे वन व उपवन में, पानी के प्राकृतिक स्त्रोत व स्वीमिंग पुल में, रमणीय स्थल व रिसोर्ट आदि में. गप्प के लिए देश, भाषा (बशर्ते दुभाषिया उपलब्ध हो), उम्र, लिंग (जेंडर) का कोई बंधन नही हो सकता है. गप्प को कोई हाँकता है, कोई मारता है, कोई लड़ाता है, सबके अपने अपने तरीके (हर गायक के अपने सुर की तरह) हो सकते हैं. गप्प की क्रिया को गप्पबाजी और सहभागी गप्पबाज कहलाते हैं. यह दो तरह के हो सकते हैं - कभी कभार गप्प के हिस्सेदार और हरदम तैय्यार, बाद वाले का नामकरण गप्पी, गपोड, गपोडा आदि हो जाता है. गप्प और मन की बात में जमीन - आसमान का अंतर होता है. गप्प विशुद्ध रुप से समय पास करने की विधा भी हो सकती है और मन बहलाव (मनोरंजन) का साधन भी हो सकती है. मन की बात में ऐसा नही है, इसके लिए समय निकालना, देखना, साधना पडता है. मन की बात के लिए विषय पूर्व से निर्धारित करना होता है और विषयानुसार श्रोताओ को जुटाना होता है. इसे उपदेश की तरह भी देखा जा सकता है और सलाह/ मार्गदर्शन की तरह भी प्रयोग किया जा सकता है. इसके स्वरुपानुसार इसे एकालाप या एक तरफा संवाद की तरह भी देखा जा सकता है. मन की बात के लिए अध्ययन, अनुभव व विशेष तैय्यारी की जरुरत होती है और गप्प तो गप्प होती है, उसके लिए क्या अध्ययन, क्या अनुभव और क्या तैय्यारी? गप्प के लिए अंदाज का विशेष महत्व है और यह अंदाज ही गप्पी को अन्य से विशिष्ठ व श्रेष्ठ निरुपित करता है. अदा व अंदाज के सहारे ही गप्प की महफिल लूटी जा सकती है.

मन की बात का अर्थ ही है, अपने मन की बात कहना, इसमें सुनने का कोई प्रावधान नही हो सकता है. जबकि गप्प में सुनने व सुनाने दोनो की गुंजाइश होती है. राजा को भी मन की बात कहने व गप्प में सम्मिलित होने का अधिकार है. रंक अपने मन की बात किसे कहेगा और कहेगा तो सुनेगा कौन? रंक अपने हिसाब से गप्प मारने / हाँकने / लडाने के लिए स्वतंत्र है, यह उसका मौलिक अधिकार भी है (बशर्ते, संवैधानिक दायरे में हो). राजा को गप्प के संदर्भ में स्टेटस का भी ध्यान रखना पडता है. प्राचीनकाल में भी राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि कहने के किस्से इतिहास में दर्ज हैं तो आज भी गाहे ङ्क बगाहे अवतार पुरुष कहने के स्वर सुने जाते रहे हैं. वह हर किसी से गप्पबाजी नही कर सकता है, इसके लिए उसके समकक्ष का ही भागीदार होना जरुरी है. बिना छुट्टी चोबीस में से अट्ठारह अट्ठारह घंटे काम करना, देश ङ्क दुनिया की चिंता करना, अपने स्टेटस का ध्यान रखना और गप्प में सम्मिलित होना इतना आसान नही है. दूसरे देश के राजा के अपने देश में आने या स्वयम के दूसरे देश में जाने और वन्हा के राजा से व्यक्तिगत मुलाकात के अवसर पर ही यह सम्भव है. एक भाषा में संवाद में गप्प का आनंद और अलग अलग भाषा के प्रयोग के अवसर पर दुभाषिए की उपस्थिति में गप्प के मजे में फर्क का अहसास तो व्यक्तिगत अनुभव ही बता सकते हैं लेकिन इससे गप्प की लय व गति तो स्वाभाविक रुप से प्रभावित होती ही होगी. खैर, गम्मत के लिए गप्प भी जरुरी है.

ऐसे समय में जब भोंडेपन और द्विअर्थी संवाद को हास्य के नाम पर प्रतिष्ठित किया जा रहा है, गासिप का स्वरुप घृणित व संकुचित हो गया है, सुंदर, खूबसूरत, स्मार्ट शब्द को हाट, सेक्सी जैसे शब्दो से विस्थापित किया जा रहा है, गप्प, गम्मत की गोष्ठी इसके बरक्स प्रतिरोध को स्वर दे सकती है?, आप क्या सोचते हैं।

ये है तृप्त करने वाला ढोकला...

षडरस

मालिनी गौतम

लेखिका साहित्यकार हैं।

दोपहर की छोटी वाली भूख के लिए कई बार ढोकला बनाती हूँ...! ढोकला कुछ ऐसा कि सुबह नाश्ते में खा लो तो भारी हो जाए और दोपहर या रात खाने में खाओ तो भोजन से अघाने पर जो तृप्ति का भाव आता है उससे थोड़ा कम रह जाए। आप सोच सकते हैं कि दोपहर की छोटी वाली भूख के लिए इतनी माथाकूट कौन करे लेकिन कहते हैं न कि प्रिय पात्र आपसे जो न कराए वह कम है।

बस एक दिन पहले रात सोते समय दो अलग-अलग बर्तन में चावल और दाल भिगो कर रख दो...अब चावल तो चावल है जो घर में हो वही ले लिया जाएगा और दाल तो स्वाद की बात है...मन हो तो धुली-धुली उड़द की दाल ले लो या चना उड़द मूँग तुअर सब थोड़ी-थोड़ी ले लो। सुबह पानी निथार कर मिक्सी में पेस्ट बना लो। ये पेस्ट बनाना भी एक कला है...वो क्या है न कि मिक्सी को कितना चलाना और कितना रोकना कि न तो डोसे का महीन घोल बन जाए और न ही इडली का घोल तैयार हो जाए इस बात का ध्यान रखना होगा ...क्योंकि हमें तो मुँह में घुलने वाला...परम् सुख देने वाले ढोकले का घोल तैयार करना है।

अब गुजरात के बाहर तो क्या है कि बेसन के खमण को ही ढोकला कह देते हैं..जब भी किसी को ऐसा कहते सुनती हूँ तो इस नाम परिवर्तन से ढोकले को गुस्सा आए या न आए मुझे बड़ी नाराजगी हो जाती है और मैं तफ़सील से खमण और ढोकले का फ़र्क समझाने बैठ जाती हूँ। यूँ भी मेरी नाराजगी से किसी को क्या फ़र्क पड़ना है लेकिन ढोकले की नाराजगी से बड़ा फ़र्क पड़ता है...वह खुशी में फूलने के बजाय गुस्से के मारे पिचक जाएगा और फिर

बनेगा सड़ियल ठोस ढोकला जो कुछ-कुछ समकक्ष हो जाएगा बेसन की बनी ढोकली के। जिसे सब्जी बनाकर ही खाना पड़ेगा।

हिंदी के साहित्यकार तो कोरोना काल के बाद से लाइव होने लगे लेकिन गुजरात में तो ढोकले का ऐसा जलवा है कि किसी भी शादी के रिसेप्शन में चले जाओ...लाइव ढोकले का काउंटर होगा ही होगा। तो ख़ैर ढोकले का घोल कुछ ऐसा तैयार हो कि रूई जैसा स्पॉन्जी भी बने और खाते समय बिल्कुल नरम-नरम कुछ दाने दाल के भी मुँह में आते रहें। इस घोल में नमक मिलाकर दिनभर का आराम दिया जाए। अब इतना सब तो हो गया सुबह ही...तो दोपहर भूख लगने के वक्त कुछ खास काम बचा ही नहीं। उष्म मौसम पसन्द है इसे। अगर सही गर्माहट मिलेगी तो खमीर अच्छा उठेगा। बनाते समय घोल में जो मन हो वो डालिए... जैसे बारिश हो रही हो तो हल्दी और लहसन-हरी मिर्च का पेस्ट डालकर पीले ढोकले बनाइए। कुछ नज़ाकत पसन्द हों तो अदरक के स्वाद वाले सफेद ढोकले आजमाइए। लेकिन ऊपर से लाल मिर्च या काली मिर्च का छिड़काव करना मत भूलिए। ये काली मिर्च या लाल मिर्च का स्वाद सीधे-सादे जीवन में प्रेम के तड़के सा अहसास देगा। स्टीमर में रखकर पका लीजिए। ढोकला तैयार होते ही संगी-साथी सब फ़्रिज से कूदकर बाहर आ जायेंगे हरी चटनी, सॉस, इमली की चटनी या खोपरे लहसन की चटनी। लेकिन पक्का गुजराती तो इसे कच्चे मूंगफली के तेल में डुबोकर ही खायेगा।

अब गुजरात और गुजराती मेरे कितने ही साथियों को नहीं पसंद... लेकिन जरा सोचिए इसमें भला ढोकले का क्या दोष तो एक बार कच्चा मूंगफली का तेल भी आजमा ही लीजिएगा और हां, अगली बार याद रखिएगा कि जो आपके यहाँ मिलता है वो खमण है ये है तृप्त करने वाला ढोकला।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला

38 साल बाद फिर क्यों शाह बानो का जिक्र?

निदा रहमान

लेखिका स्वतंत्र पत्रकार हैं।

महिला सिर्फ़ महिला होती है, उससे धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जा सकता है फिर चाहे वो हिंदू,मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी या कोई भी मज़हब की हो। 38 साल बाद सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम महिलाओं के हक़ में ऐसा फ़ैसला सुनाया है जो एक नज़ीर बनेगा। 10 जुलाई 2024 का दिन मुस्लिम महिलाओं के लिए ऐतिहासिक कहा जा सकता है क्योंकि ये दिन उनके ज़ख़्मों पर मरहम का काम करेगा। वो मुस्लिम महिलाएं जो धर्म के आधार पर बने कानून की वजह से भेदभाव का शिकार होती हैं या फिर उन्हे वो हक़ नहीं मिल पाता है जिसकी वो हक़दार होती हैं उनके लिए सुप्रीम कोर्ट ने ऐसा राहत भरा फ़ैसला सुनाया है कि अनगिनत मुस्लिम औरतें राहत की सांस लेगी। देश की सर्वोच्चय अदालत ने तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं को भी आपराधिक दंड संहिता की धारा 125 के तहत गुज़ारा भत्ते मांग करने का हक़दार बताया है। सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम महिला (तलाक संबंधी अधिकारों का संरक्षण) कानून, 1986 की सीमाओं को तोड़ते हुए कहा कि महिला चाहे किसी भी धर्म की हो, उसे शादी टूटने पर पति से गुजारा-भत्ता मांगने का हक है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सीआरपीसी की धारा 125 सभी धर्म की महिलाओं पर लागू होता है यानी यह एक धर्मनिरपेक्ष प्रावधान है। कोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट कह दिया है कि यह फैसला हर धर्म की महिलाओं पर लागू होगा और मुस्लिम महिलाएं भी इसका सहारा ले सकती हैं। इसके लिए उन्हें सीआरपीसी की धारा 125 के तहत कोर्ट में याचिका दाखिल करने का अधिकार है। सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस बीवी नागरत्ना और जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह ने यह फैसला सुनाया है। कोर्ट ने इस मामले में 19 फरवरी को फैसला सुरक्षित रखा था।

38 साल बाद आया शाह बानो जैसा केस

यह पूरा मामला तेलंगाना के एक व्यक्ति अब्दुल समद और उसकी तलाकशुदा पत्नी से जुड़ा हुआ है। फैमिली कोर्ट ने अब्दुल समद को 20 हजार रुपये प्रति माह गुजारा भत्ता देने को कहा था। समद ने इसे तेलंगाना हाई कोर्ट में चुनौती दी। तब हाई कोर्ट ने गुजारा भत्ते की रकम आधी करके 10 हजार रुपये प्रति माह कर दी। समद फिर भी संतुष्ट नहीं हुए और हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट चले आए। उन्होंने अपनी याचिका में दावा किया कि मुस्लिम महिला और इस मामले में उनकी तलाकशुदा पत्नी सीआरपीसी की धारा 125 के तहत गुजारा भत्ता मांगने की हकदार नहीं है। सुप्रीम कोर्ट में समद के वकील वसीम कादरी ने दलील दी कि दरअसल तलाकशुदा महिला के हितों के लिहाज से सीआरपीसी की धारा 125 से कहीं ज्यादा फायदेमंद मुस्लिम महिला अधिनियम, 1986 है जिसे राजीव गांधी की सरकार ने लाया था।

शाह बानो मामला क्या था?

शाह बानो इंदौर की रहने वाली एक महिला थी। साल 1975 में शाह बानो के पति मोहम्मद अहमद खान ने उसे तलाक दे दिया। शाहबानो और उसके 5 बच्चों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया। उस समय शाहबानो की उम्र 59 साल की थी।

शाहबानो ने बच्चों के लिए हर महीने गुजारा भत्ता देने की मांग की। लेकिन उसके पति ने मोहम्मद अहमद खान ने शाह बानो को तीन तलाक (तलाक-ए-बिद्दत) दे दिया। जिसके बाद उसने किसी भी तरह की मदद करने से इनकार कर दिया।

संविधान पीठ ने दिया था ऐतिहासिक फैसला

शाहबानो ने अदालत से न्याय की मांग की । हालांकि उसके पति मोहम्मद अहमद खान ने दलील दी कि तीन तलाक के बाद इद्दत की मुद्दत तक ही तलाकशुदा महिला की देखरेख की जिम्मेदारी उसके पति की होती है। तलाक के बाद गुजारा भत्ता देने का कोई प्रावधान नहीं है। मामला मुस्लिम पर्सनल लॉ से जुड़ा था। लड़ाई सुप्रीम कोर्ट तक पहुंची। पांच जजो की संविधान पीठ ने 23 अप्रैल 1985 को मुस्लिम पर्सनल लॉ बॉर्ड के आदेश के खिलाफ जाते हुए शाहबानो के पति को आदेश दिया कि वो अपने बच्चों को गुजारा भत्ता दे।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के तहत हर महीने मोहम्मद अहमद खान को 179।20 रुपये देने थे। इस आदेश में संविधान पीठ ने सरकार से 'समान नागरिक संहिता' की दिशा में आगे बढ़ने की अपील की थी।

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के दवाब के आगे झुक गए राजीव गांधी

'समान नागरिक संहिता' वाले टिप्पणी और इस फैसले को लेकर मुस्लिम पर्सनल लॉ बॉर्ड ने जमकर नाराजगी जतायी थी। मुस्लिम कट्टरपंथियों के विरोध के आगे राजीव गांधी सरकार ने घुटने टेक दिए थे। सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को पलट दिया था। राजीव गांधी की सरकार ने मुस्लिम महिला (तलाक में संरक्षण का अधिकार) कानून 1986 सदन में पेश किया।

सुप्रीम कोर्ट ने समझाया पूर्व पति का दायित्व

लेकिन अब जस्टिस नागरत्ना और जस्टिस मसीह की पीठ ने स्पष्ट कर दिया कि सीआरपीसी की धारा 125 धर्मनिरपेक्ष प्रावधान है जिस पर कोई पर्सनल लॉ हावी नहीं हो सकता है। पीठ ने यह भी कहा कि जब तक महिला की दूसरी शादी नहीं हो जाती या वो खुद सक्षम नहीं हो जाती है तब तक उसके भरण पोषण का खर्च उठाना उसके पूर्व पति का दायित्व है।

गुजारा भत्ता तलाकशुदा महिला का अधिकार- सुप्रीम कोर्ट

कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि भरण पोषण का खर्च उठाना कोई दयालुता नहीं बल्कि तलाकशुदा महिला का अधिकार है। जस्टिस नागरत्ना ने कहा, कुछ पतियों को पता ही नहीं कि पत्नियां जो गृहिणी हैं, वो उन पर भावनात्मक और अन्य दूसरे रूप से भी उन्हीं पर निर्भर होती हैं। समय आ गया है कि भारतीय पुरुष गृहणियों की भूमिका और उनके त्याग को जरूर समझें।

1986 के कानून का क्या होगा?

सुप्रीम कोर्ट ने अब्दुल समद केस में यह भी कहा कि सीआरपीसी के सेक्शन 125 के तहत याचिका सुनवाई के अधीन हो तो इस दौरान मुस्लिम महिला (निकाह संबंधी अधिकारों का संरक्षण), 2019 के तहत भी राहत की मांग की जा सकती है। कोर्ट ने कहा कि अगर कोई मुस्लिम महिला अगर दोनों कानूनों से संरक्षण देने की मांग करती है तो उसे दोनों कानूनों से संरक्षण दिया जा सकता है। इस तरह देखें तो मुस्लिम महिलाओं को सीआरपीसी, 1986 और 2019 तीनों कानूनों से संरक्षण प्राप्त करने का अधिकार मिल गया है। अगर कोई मुस्लिम महिला 1986 के कानून के तहत भरण पोषण मिलने से संतुष्ट नहीं है तो वह सीआरपीसी के तहत भी खर्चे की मांग कर सकती है। मतलब 1986 का कानून रद्द नहीं हुआ है, वह भी अपनी जगह कायम है।

मुस्लिम महिलाओं के लिए बड़ी राहत

गुज़ारा भत्ता को लेकर सुप्रीम कोर्ट का फैसला मुस्लिम महिलाओं के लिए बड़ी राहत है। क्योंकि मसुलमान औरतें तलाक के बाद गुज़ारा भत्ता के लिए भटकती रहती हैं। दमोह की रहने वाली शाहीन खान सुप्रीम कोर्ट के इस फ़ैसले से खुश हैं। शाहीन की शादी रीवा हुई थी और एक बार ससुराल जाने के बाद उनका पति से विवाद हुआ। मामला कोर्ट पहुंचा और तलाक हुई। लेकिन उन्हें ना तो दहेज का कोई सामान मिला ना ही गुज़ारा भत्ता या फिर कोई एक मुश्त रकम। वो कहती हैं कि मुस्लिम महिलाओं के साथ ये भेदभाव गलत है। हम भी दूसरे धर्म की महिलाओं की तरह तलाक के बाद गुज़ारा भत्ते के हक़दार हैं। छतरपुर की रहने वाली नाहिद खान अपनी पति के खिलाफ़ मेंटनेंस का केस लड़ रही हैं। नाहिद का पति नशा करता है और उनके साथ मारपीट भी करता था जिसके बाद वो अपने मायके आ गईं और मेंटनेंस का केस लगा दिया। नाहिद कहती हैं कि वो तलाक नहीं ले सकती क्योंकि उसके बाद उन्हें गुज़ारा भत्ता नहीं मिलेगा। पति उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है और कहता है कि वो ना ही तलाक देगा ना ही मेंटनेंस।

ग्वालियर में एनजीओ चलाने वाली सबा रहमान सुप्रीम कोर्ट के इस फ़ैसले से खुश हैं, वो कहती हैं कि सुप्रीम कोर्ट का ये फ़ैसला मुस्लिम महिलाओं के लिए बड़ी राहत है। क्योंकि मुस्लिम महिलाएं तलाक के बाद भटकती रहती हैं उनके पास कोई आर्थिक मदद नहीं होती है। इस फैसले के बाद मुस्लिम औरतें भी 125 के तहत गुज़ारा भत्ता मांग सकती हैं जो कि अब तक नहीं मिलता था। मुस्लिम महिलाओं के लिए सुप्रीम कोर्ट का ये फैसला समानता की ओर उठाया गया एक बड़ा कदम है। अब तक धर्म के आधार पर मुस्लिम महिलाएं इस तरह भेदभाव का शिकार होती रही हैं।

शराब तस्करी के आरोप में युवक गिरफ्तार, 225 बोतल अंग्रेजी शराब बरामद

बैतूल। आरपीएफ आमला की टीम ने शराब तस्करी के आरोप में एक युवक को गिरफ्तार किया है। घटना दिनांक 10/07/2024 को अपराध खुफिया शाखा आमला में कार्यरत प्रधान आरक्षक अजय सिंह को सूचना प्राप्त हुई कि ट्रेन नंबर 12722 दक्षिण एक्सप्रेस में अंग्रेजी शराब की तस्करी की जा रही है। यह जानकारी निरीक्षक अखुशा नागपुर को अवगत कराई गई, जिनके मार्गदर्शन में प्रधान आरक्षक अजय सिंह और आरक्षक विकास कुमार को कार्रवाई हेतु निर्देशित किया। उक्त ट्रेन को मुलताई स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर 02 पर समय लगभग 14:35 बजे निगरानी के दौरान, ट्रेन के पीछे वाले सामान्य कोच के सामने एक व्यक्ति को दो भारी बैग के साथ संदिग्ध अवस्था में देखा गया। उसे रोककर पूछताछ के दौरान उसने अपना नाम समर सिंह चौहान, पिता का नाम अरविन्द सिंह, उम्र 29 वर्ष, पता वार खास, औरंगाबाद, बिहार-824103 बताया और कहा कि उक्त दोनों बैग उसके हैं। जब बैग के अंदर रखे वजनी सामान के बारे में पूछा गया, तो उसने बताया कि उसमें अंग्रेजी शराब है। इसके बाद उक्त व्यक्ति और दोनों बैगों को आरपीएफ थाना आमला में लाया गया। बैगों को खोलकर देखने पर उसमें आफिसर च्वाइस की 225 बोतलें पाई गई, जिनकी कुल कीमत 20,250/- रुपये आंकी गई। पूरी प्रक्रिया के दौरान बीएनएस के मुताबिक घटना स्थल, आरोपी की व्यक्तिगत तलाशी, सुपुर्दगी के समय बराबर फ़ोटो/वीडियोग्राफी की गई। उपरोक्त व्यक्ति और शराब को अग्रिम कार्यवाही हेतु लिखित आवेदन पत्र के साथ आरपीएफ पोस्ट आमला को सुपुर्द किया गया। आरपीएफ पोस्ट आमला के सहायक उप निरीक्षक विरेश उपाध्याय ने आवश्यक कागजात तैयार कर शराब और आरोपी को राज्य उत्पादन शुल्क मुलताई को सुपुर्द किया। उपरोक्त शराब तस्कर के विरुद्ध आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच में लिया गया।

खेड़ीकोर्ट हायर सेकेंडरी स्कूल की बिल्डिंग हुई जर्जर

बैतूल। ग्राम खेड़ीकोर्ट हायर सेकेंडरी स्कूल की बिल्डिंग हुई जर्जर ग्रामीणों द्वारा पिछले 2 वर्ष से किया जा रहा है शिक्षा विभाग के अधिकारियों से निवेदन की स्कूल की स्थिति बहुत अधिक जर्जर हो चुकी है पूर्व में कलेक्टर द्वारा भी दिया गया था आश्वासन आज दिनांक तक भी नहीं किया गया निराकरण हायर सेकेंडरी स्कूल में 9 वी से 12वीं तक होता है संचालन जिसमें विषय वार 14 कक्षा की आवश्यकता होती है प्राचार्य द्वारा बताया गया है कि हमारे पास सिर्फ पांच कमरों की व्यवस्था है हमे 15 कमरों की आवश्यकता है अभी 5 कमरों में संचालन किया जा रहा है स्कूल ऐसा रहा तो बच्चे किस प्रकार से अपनी पढ़ाई पूरी करके अपना उज्जवल भविष्य बनाएंगे शिक्षा विभाग का इस ओर कोई ध्यान नहीं है शासन क्या कर रहा है कुछ पता नहीं क्षतिग्रस्त कमरों में कक्षाएं संचालित की जा रही है। भविष्य में कोई दुर्घटना होती है तो इसका जवाबदारी कौन होगा शासन प्रशासन प्राचार्य पालक या छात्रा स्वयं क्या शिक्षा विभाग की भी तभी आंख खुलती है जब कक्षाएं संचालित करने का समय आता है आखिर क्या होगा उन छात्रों का भविष्य जो ऐसी शालाओं में अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं कौन है उनके भविष्य का जिम्मेदार जब भी शिक्षक विभाग के अधिकारियों से संपर्क किया जाता है तो उनके द्वारा कहा जाता है की जानकारी विभाग को भेजी जा रही है आज शिक्षा विभाग के सक्षम बारमाटे ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जिन्होंने हायर सेकेंडरी स्कूल खेड़ीकोर्ट का आज निरीक्षण किया और प्राचार्य को आदेशित किया की जर्जर भवन को पूर्णतया बंद किया जाए एवं उधर छात्रों का आना-जाना रोक दिया जाए एवं शीघ्र ही स्कूल के संचालन के लिए कार्यवाही की जाए।

रपटा पार कर रहा युवक बाइक सहित बाढ़ में बहा

16 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद घटनास्थल से 8 किमी दूर मिला शव

थाना साईंखेड़ा व एसडीआरएफ की टीम ने संयुक्त सर्च कर ढूंढा युवक का शव

बैतूल। जिले के प्रभातपट्टन इलाके में मानसून की झमाझम वर्षा होने से बुधवार को नदी-नालों में बाढ़ की स्थिति बन गई थी। इसी दौरान रायआमला एवं मीरापुर के बीच सड़क पर रपटा पार कर रहे दो युवक बाइक सहित नाले में बह गये। जिसमें से एक तो किसी तरह नाले से तैरकर बाहर निकल गया, लेकिन दूसरा नहीं बच पाया। गुरूवार को थाना साईंखेड़ा की पुलिस टीम एवं एसडीआरएफ की संयुक्त टीम द्वारा लगभग 16 घंटे सर्च एवं कड़ी मशक्क त करने के बाद घटनास्थल से 7-8 किमी दूर शव ढूंढने में सफल हो पाई।

घटना का संक्षिप्त विवरण

बुधवार 10 जुलाई को सुबह लगभग 10 बजे दिनेश पिता गयादीन लोहारे 35 साल निवासी पोहर थाना मुलताई, बाजार करने ग्राम बिरूलबाजार अपने दोस्त संतोष पिता नामदेव सोलंकी 34 साल निवासी ग्राम बलेगांव थाना सांईखेड़ा के साथ उसकी मोटरसाइकिल से गया था। चूंकि दिनभर तेज बारिश हुई थी, और शाम के समय करीब 7.30 बजे दिनेश अपने साथी संतोष के साथ मोटरसाइकिल से वापस लौट रहा था तो मीरापुर एव रायआमला के बीच नाले पर बने रपटे के ऊपर पानी का तेज बहाव था, पानी के तेज बहाव को नजरअंदाज करते हुए वे बाइक से उतरकर उसे धकेलकर रपटे के दूसरी ओर ले जाने का प्रयास कर रहे थे। रपटे के बीच रास्ते में पानी के तेज बहाव होने से बाइक अनियंत्रित हो गई और वे बाइक के साथ बहने लगे। तेज बहाव के कारण दोनों मोटरसाइकिल सहित बह गये। संतोष को तैरना आता था जो तैरकर नाले से निकल गया था, लेकिन दिनेश लोहारे को तैरना नही आता था, जिस कारण पानी के तेज बहाव में नाले के पानी में बह गया। जिसकी रात्रि से ही तलाश जारी थी, तलाश के दौरान बाइक तो मिल गई थी लेकिन सुबह तक दिनेश का पता नहीं चल पाया था। जिसे गुरवार को थाना साईखेड़ा एवं एसडीआरएफ की टीम तथा ग्रामीणों के सहयोग से लगभग 16 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद घटना स्थल से 7-8 किमी दूर युवक के शव को ढूंढ लिया गया। पानी में डूबने से दिनेश लोहारे की मृत्यु हो चुकी थी जिसके शव का पंचनामा कर युवक के शव का पीएम हेतु कार्यवाही की जा रही है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी साईखेडा निरीक्षक मुकेश ठाकुर, उप निरी. बसंत आहके, उनि पूनमचंद साहू प्रआर. 529 दिलीप , आर. 603 विनोद, आर. 633 कमलेश, सैनिक चंद्रभान, शशि, गुलाब, गुरदयाल, एसडीआरएफ टीम प्रभारी प्लाटून कमांडर सुनीता पंद्रे एव एसडीआरएफ जवान राजा, राकेश, अलकेश, पीयूष, फतेह सिंह, संदीप, एवं 07 सिविल वालंटियर की सराहनीय भूमिका रही।

बाढ़ में बहे मछुआरे की मिली लाश

बैतूल। रानीपुर पुलिस ने बताया कि शिवप्रसाद उर्फ लल्लू पिता शंकर कहार उम्र 54 कल शाम को घर से निकला था। वह मछली पकड़ने के लिए गया था। वापस नहीं आने पर उसके परिवार वालों ने आज सुबह तलाश शुरू की गई तो उसका शव चोपना के पास स्टाप डेम में मिला। इसकी सूचना पुलिस को दी गई जिसके बाद पुलिस पहुंची और मर्ग कायम कर शव डेम से निकलवाकर पीएम के लिए भेजा था। पीएम उपरांत शव परिजनों को सौंप दिया है। एसडीईआरएफ की टीम भी मौके पर पहुंची थी लेकिन उसके पहले ही शव मिल गया था।

जिनके जिम्मे अस्पताल की देखरेख, वही ड्यूटी से गायब

नए अस्पताल में ठंडे बस्ते में ओटी निर्माण कार्य तीन माह पहले मुख्यमंत्री ने किया था उद्घाटन

- शासन ने सहायक प्रबंधक की नियुक्ति की, लेकिन व्यवस्था में सुधार नहीं

बैतूल। राज्य शासन के लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग ने हर जिला चिकित्सालय की देखरेख के लिए एक सहायक प्रबंधक की नियुक्ति की है। इनके जिम्मे अस्पताल की साफ सफाई समेत देखरेख और इलेक्ट्रिक आडिट फुड सेफ्टी आडिट, बायोमेडिकल वेस्ट सर्टिफिकेशन समेत अन्य जिम्मेदारियां, लेकिन ताज्जुब की बात यह है कि जिला चिकित्सालय में पदस्थ सहायक प्रबंधक शिवेंद्र अंबुलकर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ रहे हैं। कई दिनों तक वे अस्पताल ही नहीं पहुंच रहे हैं, इससे व्यवस्थाएं लड़खड़ा रही है। राज्य शासन द्वारा जिला चिकित्सालय में सहायक प्रबंधक के रूप में अंबुलकर को नियुक्त किया गया है। राज्य शासन ने इन्हें सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक और शाम 5 से 6 बजे तक अस्पताल में रहकर अस्पताल में संचालित समस्त गतिविधियों की निगरानी करने और समीक्षा के निर्देश दिए हैं। दैनिक निरीक्षण की जानकारी अलग से रजिस्टर में अद्यदितित कर नियमित रूप से शासन को अवगत कराना है। अस्पताल में पाई गई कमियों को तत्काल सुधारने और मरीजों को दी जाने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं को भी देखना है।

शासन के आदेश हवा में-

राज्य शासन ने नियमित रूप से अस्पताल के निरीक्षण के लिए सहायक प्रबंधक की नियुक्ति तो कर दी है, लेकिन बैतूल में हालात दूसरे हैं। कई दिनों तक सहायक प्रबंधक व्यवस्थाओं का जायजा लेने अस्पताल नहीं पहुंचते हैं। सूत्रों ने बताया कि अस्पताल में मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जगह-जगह गंदगी बजबजा रही है। कई संसाधनों की कमी के कारण मरीजों को परेशान होना पड़ रहा है, लेकिन सहायक प्रबंधक के अस्पताल न पहुंचने के कारण व्यवस्थाएं गड़बड़ा गई है। कहा जा रहा है कि अभी वे मेडिकल अवकाश पर है, लेकिन अवकाश के पहले भी वे नियमित रूप से जिला अस्पताल में आकर अपने दायित्वों का निर्वाहन नहीं कर रहे हैं, जबकि सहायक प्रबंधक को राज्य शासन ने सिविल सर्जन के बाद सबसे अधिक अधिकार दे रखे हैं। इसके बावजूद उनका लगातार गायब रहना जिला अस्पताल में मरीजों को होने वाली असुविधा के लिए जिम्मेदार कहा जा सकता है। इससे पहले भी उनके अस्पताल में नहीं आने का मामला सामने आया था, लेकिन संबंधित अधिकारी चुप्पी साधे बैठे हैं। मामले की शिकायत अब स्वास्थ्य विभाग के प्रमुख सचिव को सबूत के साथ किए जाने की जानकारी सामने आई है।

इनका कहना-

सहायक प्रबंधक की नियुक्ति राज्य शासन ने की है। उनका कार्यक्षेत्र पूरा जिला अस्पताल है। अभी वे मेडिकल अवकाश पर है, लेकिन नियमित रूप से नहीं आने की शिकायत मिलती है तो वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराएंगे।

-डॉ. अशोक बारंगा, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

विश्व जनसंख्या दिवस

लक्ष्य दम्पत्तियों को परिवार नियोजन की दी जाएगी सेवाएं: डॉ.उईके

बैतूल। परिवार नियोजन हेतु तैयार लक्ष्य दंपत्तियों को परिवार नियोजन की सेवाएं दी जाएगी। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रविकांत उईके विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर गुरूवार को सीएमएचओ कार्यालय के सभाकक्ष में संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि 11 जुलाई से 11 अगस्त 2024 तक यह कैंप लगाया जाएगा। जिसमें अस्थायी साधन बच्चों में अंतर रखने हेतु माला एन,छाया गोली, निरोध, आई.यू.सी.डी एवं अंतरा इंजेक्शन के अलावा स्थाई साधन नसबंदी सेवाएं जिला चिकित्सालय, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र एवं सिविल अस्पताल में प्रदाय की जायेगी। जिला परिवार कल्याण अधिकारी डॉ.राजेश परिहार ने बताया कि 11 जुलाई को पूरे विश्व में जनसंख्या दिवस मनाया जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य तेजी से बढ़ती जनसंख्या और उससे जुड़ी चुनौतियों के प्रति जागरूकता लाना है।

कार्यक्रम में डीपीएम डॉ. विनोद साक्य उप. मीडिया अधिकारी महेश राम गुबरेले, डीसीएम कमलेश मसीह, प्रभारी परिवार कल्याण शाखा भगतसिंह उईके, एफआरएचएस इंडिया से डॉ.योगेश पवार ,श्री सुरेश वागद्रे, शहरी स्वास्थ्य केन्द्र बैतूल से श्री कृष्णकांत पाटील, श्री विनक पवार एवं शहरीक्षेत्र की आशा कार्यकर्ताएं उपस्थित रही।

भूटान खेलने जाने वाले लाठी खिलाड़ियों की मदद हेतु आगे आया व्यापारी संगठन

बैतूल। अगर किसी चीज को शिद्दत से चाहो, तो पूरी कायनात तुम्हे उससे मिलाने में लग जाती है। ईश्वर भी उनकी सहायता किसी न किसी माध्यम से करवा ही देता है कुछ ऐसा ही हुआ है, बैतूल के चुन्नीढाना की लाठी खिलाड़ी चार बेटियों के साथ। बैतूल की लाठी खिलाड़ी लड़कियां आर्थिक हालातों के चलते प्रतियोगिता में हिस्सा लेने से परेशान थी। जिनका राष्ट्रीय स्तर पर भूटान जाने के लिए चयन तो हो गया, किंतु भूटान जाने के लिए आर्थिक समस्या मुंह बायें खड़ी थी। जब अखबारों में प्रकाशित समाचारों से कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स बैतूल (कैट) के ग्रुप को जानकारी हुई तो उन्होंने तत्काल संगठन के सदस्यों के सहयोग से 14,251 रुपए की आर्थिक मदद लाठी खिलाड़ियों को उनके निवास पर जाकर उपलब्ध कराई। व्यापारी संगठन कैट के प्रचार सचिव राजेश मदान ने बताया कि लाठी खिलाडयिों का बैतूल के कनफेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स के व्यापारी संगठन के सदस्यों ने आर्थिक मदद के साथ बेटियों का हौसला बढ़ाते हुए विश्वास जताया कि वे विश्व भर में भारत के साथ बैतूल जिले का भी नाम रोशन करेगी और भविष्य में भी यदि किसी भी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता होगी, तो बैतूल का व्यापारी संगठन हमेशा तत्परता से तैयार रहेगा।

कैट संगठन और व्यापारियों ने की आर्थिक मदद

जिले के कई ब्लाकों में हुई झमाझम बारिश, फसलों को होगा फायदा

बैतूल। जिले में मानसून की झमाझम बारिश होने लगी है। बारिश से किसानों के चेहरे खिल उठे। फसलों को भी फायदा होने लगा है। पिछले 24 घंटे में घोड़ाडोंगरी में 3 इंच और चिचोली में 2 इंच बारिश दर्ज की है। इन दो ब्लॉकों के अलावा अन्य ब्लॉकों में भी झमाझम बारिश होने के समाचार मिले है। अगले 24 घंटे के दौरान जिले में फिर बारिश होने की संभावना जताई है। जानकारी के मुताबिक बुधवार शाम और रात में बैतूल जिले के कई ब्लॉकों में तेज बारिश हुई है। बारिश के कारण घोड़ाडोंगरी क्षेत्र में कई छोटे-बड़े नदी, नालों में पहली बार बाढ़ आई है। बाढ़ के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को परेशानियों का भी सामना करना पड़ा है। भू-अभिलेख कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार बुधवार से गुरूवार सुबह 8 बजे तक बैतूल में 1.2, घोड़ाडोंगरी 72.2, चिचोली 50.0, शाहपुर 33.0 मुलताई 16.2, प्रभातपट्टन 4.0, आमला 12.0, आठनेर 43.3 मिमी बारिश दर्ज की है। अब तक जिले में औसत बारिश का आंकड़ा 223.8 मिमी पर पहुंच चुका है। हालांकि इस वर्ष पिछले वर्ष की अपेक्षा कम बारिश हुई है। गत वर्ष अब तक 231.5 मिमी बारिश हो चुकी थी।

जल स्त्रोत भी होने लगे रिचार्ज- जिले में अच्छी बारिश होने के बाद जल स्त्रोत भी तेजी से रिचार्ज होने लगे है। गर्मी के दिनों में जो जल स्त्रोत सूख गए थे और जिन जलस्त्रोतों का जलस्तर बहुत नीचे चला गया था। ऐसे जल स्त्रोत अब रिचार्ज होने लगे है। जल स्त्रोतों के अलावा जलाशय और कुंओं में भी अब पानी भरने लगा है। इसी तरह झमाझम बारिश होते रही तो जल्द ही जिले में बारिश का कोटा पूरा हो जाएगा और जल स्त्रोतों में भी पर्याप्त पानी आएगा। पिछले वर्ष अच्छी बारिश होने से जलाशय भी लबालब हो गए थे। इस वर्ष भी अच्छी बारिश होने और जलाशय में पर्याप्त पानी आने की संभावना है।

कलचुरी महिला मण्डल द्वारा किया रेनकोट वितरण एवं वृक्षारोपण

नरसिंहपुर। हैहय क्षत्रिय कलार महिला मण्डल नरसिंहपुर द्वारा विगत दिवस कार्यकम आयोजित कर संजय माध्यमिक शाला पुलिस लाईन नरसिहपुर में बच्चों को रेनकोट वितरित किये गये तथा महिला मंडल की सदस्यों द्वारा प्रकृति संरक्षण हेतु वृक्षारोपण भी किया गया। शाला प्रभारी संजय चौबे द्वारा कलार महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमति प्रीति प्रदीप राय एवं वरिष्ठ सदस्यों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम के दौरान महिला मंडल की संरक्षक गोदावरी राय, सरोज राय, अर्चना राय, स्वाति जायसवाल, प्रतिभा राय, ज्योत्सना राय, आरती राय, जयश्री राय, मीनू महाजन, इंदिरा राय, मुक्ति राय, सरिता राय तथा रेनू जायसवाल, राय सहित शाला के बच्चों की बड़ी संख्या में उपस्थित रहीं ।

भाजपा जिला महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन 12 जुलाई को

बैठक कुक्षी मेघनाथ घाट पर

धार। भारतीय जनता पार्टी मध्यप्रदेश के निर्देशानुसार, भारतीय जनता पार्टी जिला धार की अति महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन कुक्षी के समीप मां नर्मदा तट मेघनाथ घाट पर 12 जुलाई को दोपहर 12 बजे किया जाएगा । इस महत्वपूर्ण बैठक में केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर, संभाग प्रभारी राघवेंद्र गौतम, जिला प्रभारी श्याम बंसल, भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, भाजपा प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल , विधायक नीना वर्मा और कालू सिंह ठाकुर पूर्व जिला अध्यक्ष सहित वरिष्ठ नेता सम्मिलित होंगे। बैठक का मुख्य उद्देश्य प्रदेश से प्राप्त आगामी कार्यक्रमों और महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करना तथा पार्टी के वरिष्ठजनों का मार्गदर्शन प्राप्त करना है। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि बैठक में वरिष्ठ नेता जिला पदाधिकारी, मोर्चा जिला अध्यक्षगण, प्रकोष्ठ संयोजक जिले के मंडल अध्यक्षगण और मंडल प्रभारीगण की अनिवार्य रूप से उपस्थिति अपेक्षित है।

आचार्य विद्यासागर महाराज जी का 57वां दीक्षा समारोह मनाया

नरसिंहपुर। युग प्रवर्तक ब्रम्हलीन आचार्य विद्यासागर महाराज जी का 57 वां दीक्षा समारोह कंदेली स्थित जैन मंदिर जी में उपस्थित श्रावकों द्वारा मनाया गया। दीक्षा दिवस के पुनीत अवसर पर मंदिर जी में प्रातः 8 बजे महाराज श्री के तेलचित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन किया गया। उपरांत अष्ठ द्रव्य के साथ भक्ति आराधना की गई। बड़ी संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर धर्म-लाभ अर्जित किया।

सहआयोजन में वृहद पौधारोपण कार्यक्रम

नरसिंहपुर। एक पौधा मां के नाम कार्यक्रम के अंतर्गत विगत दिवस पीएम श्री शासकीय संजय माध्यमिक शाला पुलिस लाइन नरसिंहपुर में वसुंधरा गैस एजेंसी नरसिंहपुर, गिरिराज गैस एजेंसी नरसिंहपुर, जे पी गैस एजेंसी गोटेगांव एवं पुलिस लाइन शाला के सहआयोजन में वृहद पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन भारत गैस के टेरिटरी मैनेजर महेश कांबले के मुख्य आतिथ्य, सेल्स ऑफिसर नितिन खोटे एवं जे पी गैस एजेंसी गोटेगांव के संचालक नीरज मिश्रा बॉबी के विशिष्ट आतिथ्य तथा वसुंधरा गैस एजेंसी के संचालक आलोक अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रधान पाठक संजय चौबे ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर अपने विचार रखते हुए जीवन में पौधों के महत्व और पौधारोपण की आवश्यकता के बारे में बच्चों को अवगत कराया । मुख्य अतिथि महेश कांबले ने शिक्षा के महत्व के साथ-साथ गैस सिलेंडर के घरेलू उपयोग एवं उससे संबंधित सावधानियां के बारे में बच्चों को जानकारियां दी । कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे आलोक अग्रवाल ने शाला में नियमित उपस्थिति एवं विगत कक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले बच्चों को उपहार भेंट किया। समस्त अतिथियों के द्वारा शाला प्रांगण में रजनीगंधा, आम, जामुन एवं अशोक के पौधों का रोपण किया । इस अवसर पर समस्त बच्चों को वसुंधरा गैस एजेंसी के सौजन्य से स्वल्पाहार की व्यवस्था भी की गई ।कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मुक्ति राय के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शिक्षिकाएं श्रीमती रश्मि नेमा, श्रीमती शालिनी महाजन, श्रीमती नाजरा बेगम, श्रीमती आशा गिरे, गैस एजेंसियों के अधिकारी कर्मचारी, अभिभावकों एवं शाला प्रबंधन समिति के सदस्यों की सराहनीय उपस्थिति रही । आभार प्रदर्शन प्रधान पाठक संजय कुमार चौबे के द्वारा किया गया।

सकल पंच राठौड़ समाज द्वारा नवीन भवन निर्माण कार्य के लिए भूमिपूजन कर किया पौधा रोपण

धार। देवीजी रोड स्थित राठौड़ मैरिज गार्डन पर गुरुवार को सकल पंच राठौड़ समाज द्वारा नवीन भवन निर्माण कार्य के लिए भूमि पूजन किया गया। इस मौके पर समाजजनों ने पौधा रोपण किया। इसमें नीम, बरगद सहित औषधीय पौधों का रोपण किया गया। साथ ही पौधों की देखरेख का संकल्प लिया। इस अवसर पर सकल पंच राठौड़ समाज अध्यक्ष कमल राठौड़ ने समाजजनों को संबोधित करते हुए कहा कि पर्यावरण को देखते हुए हर व्यक्ति को साल में एक बार पौधें का रोपण जरूर करना चाहिए। साथ ही जब तक पौधा बड़ा नहीं हो जाए तब तक उसकी देखरेख करना चाहिए। गुरुवार को राठौड़ मैरिज गार्डन पर भूमि पूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बड़ी संख्या में समाजजन शामिल हुए। वहीं पर्यावरण को देखते हुए गार्डन में 50 से अधिक पौधों का रोपण किया गया। सकल पंच राठौर

समाज अध्यक्ष कमल राठौर व नवयुवक मंडल अध्यक्ष आकाश पिंटू मालवा ने बताया कि नवीन भवन को आधुनिक तरिके से बनाया जाएगा। इसमें 24 कमरों के साथ हाल व अन्य सुविधा होगी। जिसका निर्माण कार्य जल्द ही शुरू होगा।

प्रकृति प्रेमी धार की जनता करेगी सामुदायिक पौधारोपण

धार। नगर सदैव विभिन्न सामाजिक विषयों पर इतिहास रचता आया है, एक बार और एसा अवसर आया है जब धार का समाज सामुहिक रुप से पौधारोपण करने जा रहा है । काल भैरव मंदिर के पिछे नटनागरा तालाब के किनारे वाली पहाड़ी को जिसे हम जमनजत्ती की टेकरी के नाम से जानते हैं उसे वन विभाग द्वारा वन संरचना के रुप में विकसित करने का संकल्प लिया है ।

इसी स्थान पर नगर के सभी प्रकृति प्रेमी 14 जुलाई रविवार को सामुहिक पौधारोपण करने जा रहे हैं। जिसमें नगर के सामाजिक संगठन, धार्मिक संगठन , क्लब स्वयंसेवी संस्था के सदस्य एवं नगर के समाजजन सपरिवार सम्मिलित हो कर अपने पुर्वजों की स्मृति में एक पौधा लगाएंगे। सभी नगरवासी प्रातः 9 बजे फिल्टर प्लांट रिंक रोड़ पर एकत्रित होंगे एवं वहीं से एक साथ जमनजत्ती टेकरी पहुँच कर अपने तेजस्वी पुर्वजों की स्मृति में पौधारोपण करेंगे । इस कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु एक समिति बनाई गई है। समिति की सहसंयोजक गरिमा रामपाल बताया कि यह कार्यक्रम 'एक पौधा विश्वगुरु भारत के नाम' से आयोजित किया जा रहा है, भारत ने सदैव ही विश्व का मार्गदर्शन किया है आज पर्यावरण की समस्या वैश्विक स्तर की है इस समस्या का समाधान पुरे विश्व को भारत ही दे सकता है। इसी दिशा में हम धार वासी एक पहल करने जा रहे हैं पौधारोपण या प्रकृति संरक्षण केवल कुछ लोगों का या शासन प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है अपितु सम्पूर्ण समाज की जिम्मेदारी है । यह अभियान समाज का आंदोलन बने इसी उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है इस कार्यक्रम के सुचारू रुप से संचालन हेतु एक समिति बनाई गई है । संरक्षक संतोष चौबे, संयोजक विशाल निगम, सह संयोजक पुनित शिवले को बनाया गया है।

पुलिस से ज्यादा दबदबा तो मुख्यालय पर अपराधियों का..?

नर्मदापुरम। मुख्यालय पर पुलिसिया कार्यप्रणाली को लेकर प्रायः लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं..? आमजनता में पुलिस मानों अपना विश्वास खोती जा रही फिर पुलिस का खौफ अपराधियों को नहीं वह क्यों.. आखिर गलत काम करने वाले अपराध करने से बाज भी नहीं आ रहे और पुलिस उनपर कारवाई करने से हिचक रही है वह क्यों ..? एक सीधा सा सवाल है पुलिस आमजनता की रक्षा, अपराध और अपराधियों को नियंत्रित करने के लिए है लेकिन यहां उल्टा हो रहा। आमजनता पुलिस से खौफ खा रही, अपराध और अपराधी नियंत्रण में नहीं ऐसे में पुलिस का होना नहीं होना एक बराबर हो जाता। कुछ दिन पहले महिला के घर में घुसकर छेड़खानी करने वाले आरोपी की रिपोर्ट दर्ज कर पोर्टल से रिपोर्ट गायब रहने वाली पुलिस ने एक दिन पहले क्रिकेट सट्टेबाजी को लेकर जुमेराती में खासी मार-पीट हुई, खाई बाज ने किसी शर्मा को जमकर धुना, मामला पुलिस में पहुंचा रिपोर्ट हुई वहां तक मामला ठीक रहा लेकिन बाद में खाई बाज की ओर से भी पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर काउंटर बना दिया । राजनीतिक दबाव के चलते पुलिस ने यदि काउंटर केस दर्ज किया इससे तो पुलिस की छवि खराब हुई साथ ही पुलिस से ज्यादा उस खाई बाज का खौफ क्षेत्र में बरकरार हो गया। क्राईम समीक्षा बैठक में विधायक पहली बार स्वीकार किया कि नगर में क्रिकेट सट्टेबाजी, अवैध शराब बिक्री हो रही पुलिस के लिए यह शर्मनाक बात थी।

इसमें भी ज्यादा शर्मनाक बात तो यह है कि पुलिस जानती है कि विधायक के समीपस्थ ही इन कामों में लिप्त है वो कहती भी है फिर पुलिस राजनीतिक दबाव बर्दाशत क्यों करती है ..? और नगर में अवैध कारोबार चलने क्यों देती.? फिर तनख्वाह भी पुलिस की इतनी हो गई कि ईमानदारी से मिल रही तनख्वाह से परिवार चल सकता है, फिर अपराधियों से उपकृत होने का जरुरत क्या.? पुलिस की छवि पर तो इससे दाग ही लगता है, जिला अस्पताल में अब पुलिस के साथ डाक्टर की झूमा झटकी हुई है ऐसा क्यों..? चाकू बाजी में घायल की भोपाल इलाज के दौरान मौत हो जाने पर उनके परिजनों को सतरास्ते पर अर्थी रखकर पुलिस के विरुद्ध नारेबाजी करना पड़ा क्यों यह सब मुख्यालय पर स्थित पुलिस की ईमानदारी के प्रमाण है। कुछ कागजों के टुकड़ों पर अपना ईमान खराब कर रही पुलिस इस समय खुद ईमानदारी को लेकर कटघरे में है। सालों से जमें नगर और देहात थाने के पुलिस कर्मियों के सहारे कोतवाल तो घी पी रहे और वो भी राजनैतिकों के इशारे पर अपराध और अपराधियों को बढ़ावा दे रहे यह सब क्यों..?

डूब क्षेत्र भराव कर बने गार्डन को क्लीन चिट

विवादास्पद अतिक्रमण हटाओ दल प्रभारी ने बताया गार्डन से लगकर निकले नाले किनारे के सभी अतिक्रमण हटाए जायेंगे

नर्मदापुरम। सतरास्ते पर जेसीबी मशीन से हाथ ठेले और टपों को तोड़ने के मामले में विवादास्पद हुए अतिक्रमण हटाओ दल प्रभारी ने आज नमन नमामि गार्डन से लगकर निकले नालों का अतिक्रमण हटाने की बात कही है, अतिक्रमण हटाओ दल प्रभारी सुनील राजपूत के इस कथन से स्पष्ट होता है डूब क्षेत्र भोपाल तिराहा पर सड़क की ऊंचाई तक लगभग 20 फुट मिटटी, गिट्टी पत्थर बोल्डर से भराव कर नाले का मुंह सीमित करने वाले नमन नमामि गार्डन मालिक ने डूब क्षेत्र में भराव कर कोई नियम विरुद्ध कार्य नहीं किया है। बल्कि सड़क की ऊंचाई तक भराव करने से बने नाले के किनारे लोगों की बसाहट ने नाले को अवरोधित कर रखा है। जिसे ढूंढने में परेशानी हो रही है। इस जगह नाले के किनारे अतिक्रमण हो जाने से ढक मुंद गए नाले को क्लियर करना है। यानी गरीबों के अतिक्रमण हटाना जरूरी हो गया उसे आज से हटाया जायेगा..। जब उनसे इस गार्डन के बाजू में करीब दो एकड़ रकबे पर डाले गए अवैध रूप से हजारों ट्रक और डम्फर मिट्टी के भराव को कलेक्टर द्वारा अवैध मानकर स्टे करना बताया गया तब बगल झांकते हुए उन्होंने इस विषय पर महेन्द्र तोमर सब-इंजिनियर से बात करने को कहा, रसूलिया ग्राम में पड़ने वाले भोपाल तिराहा के डूब क्षेत्र की इस जमीन का मामला ही दर असल कुछ और है। हाईवे से लगी डूब क्षेत्र की जमीन

सस्ते में खरीद कर कीमती बनाने का काम यहां भूस्वामी कर रहे, एक भूस्वामी ने अश्वत्थामा मारा गया हाथी या आदमी वाली कहावत इसमें शामिल की, डूब क्षेत्र में व्यवसायिक जलीय काम काज करने के लिए डायवर्सन की आड़ में डूब क्षेत्र का भराव कर यहां गार्डन निर्मित किया गया। प्रशासनिक, राजनीतिक स्तर पर मिले संरक्षण ने जिसमें दूसरे के जीवन को संकट में डाल दिया। इस डूब क्षेत्र में उपर के क्षेत्रों का बरसाती पानी जमा हो फैलकर अंग्रेजी शासनकाल की बनी दो पुलियाओं के रास्ते नर्मदा नदी के जरिए नगर से बाहर निकलता था। मिट्टी भराव के कारण जो बाधित होकर निकल पाती। इससे उपर के क्षेत्र नर्मदा बिहार कालोनी, आदमगढ़, नारायण नगर, गीता मैरिज पैलेस, सहित उपर क्षेत्रों का पानी तीव्रता से नहीं निकल पाने से लोगों के घरों में घुसकर नुकसान पहुंचा रहा। उस व्यवस्था के लिए नगरपालिका गार्डन के कारण निर्मित नाले पर हुए अतिक्रमण को अवरोध मानकर हटाने की कसरत कर रही। इसमें उसे कितनी कामयाबी मिलती है अब देखने वाली बात है। जबकि एक अनार और सौ बीमार वाली कहावत केवल डूब क्षेत्र में भराव कर बनाए गए गार्डन से शुरू हुई है। इस जगह यदि पिलरों पर आधुनिक टेक्नोलॉजी का उपयोग कर भूमि का व्यवसायिक उपयोग किया जाता तो ना यहां नाला बनता ना गरीब गुर्गे बसाहट करते ना उपर के क्षेत्र बरसाती पानी के कहर का दंश भोगते..? डूब क्षेत्र का भराव कर केवल एक गार्डन ने नगरीय व्यवस्था उथल-पुथल कर डाली उसके बाजू में प्रशासन ने जबकि दूसरे भराव को अवैध मानते हुए जनहित में उसे स्टे कर रखा है।

बरमान में हो रहे पीली मिट्टी के खनन पर लगे रोक

नरसिंहपुर। करेली तहसील के अंतर्गत ग्राम पंचायत बरमान कला में पीली मिट्टी के खनन को लेकर ग्राम पंचायत द्वारा लगाई गई आपत्ति और इस मामले में कार्रवाई किए जाने की मांग को लेकर जिला प्रशासन सहित संबंधित विभाग के द्वारा अब तक किसी भी प्रकार की कार्रवाई न किये जाने को लेकर जिले में प्रशासनिक अधिकारियों की हठधर्मिता और मनमानी को लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं । गौरतलब है कि राष्टीय राजमार्ग 44 के अंतर्गत ओवर ब्रिज और साइड रोड निर्माण कार्य के लिए ठेका कंपनी द्वारा बरमान से लगे स्टेडियम ग्राउंड क्षेत्र के आसपास से मिट्टी का खनन किया जा रहा है जिससे भविष्य में नर्मदा नदी में बरसात के समय भारी

जलभराव के चलते बरमान ग्राम के झिरना मोहल्ले में पानी पहुंचेगा वहीं स्टेडियम से लगे क्षेत्र में नालों से मिट्टी खनन होने से स्टेडियम को भी नुकसान पहुंचेगा इसको लेकर पूर्व में भी ग्राम पंचायत,बरमान द्वारा इस क्षेत्र से मिट्टी खनन पर रोक लगाई जाने की मांग की गई थी । किंतु कुछ समय तक खनन का कार्य बंद हो गया था और गत 7 जुलाई 2024 से दिन-रात भारी मात्रा में पुनः खनन कार्य प्रारंभ कर दिया गया है । इस बात को लेकर क्षेत्रीय ग्रामीण सहित ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों ने सीएम हेल्पलाइन, जिला कलेक्टर नरसिंहपुर और खनिज अधिकारी के यहां शिकायत कर इस मामले में रोक लगाये जाने की मांग की है । महत्वपूर्ण बात यह है कि सड़क निर्माण का ठेका लिये ठेकेदारों को अगर पीली मिट्टी का खनन किया ही जाना है तो वह ऐसे स्थानों से पीली मिट्टी का खनन करें जिससे कि अगर भूमि समतल होती है तो उस का लाभ आम लोगों को मिल सके, बावजूद उसके ऐसी जगह से और सड़कों के किनारे से मिट्टी खोदी जा रही है जिससे आने वाले समय में किसी भी प्रकार की जनधन की हानि होने की संभावना लगातार बनी रहेगी ।

जवाहर नवोदय विद्यालय बोहानी में पहुँचकर कलेक्टर ने बच्चों को किया मोटिवेट

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने गुरूवार को जवाहर नवोदय विद्यालय बोहानी का जायज़ा लिया। उन्होंने यहां पीओपी से निर्मित म्यूजियम कार्नर का लोकार्पण किया। विद्यालय में स्थित बुद्ध पार्क में एनएसएस छात्र- छात्राओं की सहभागिता से एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण किया। उन्होंने यहां अशोक का पौधा रोपा और कहा कि रोपे गये पौधों को संरक्षित करना और उसकी देखभाल करना हमारी जिम्मेदारी है। कलेक्टर ने छात्र- छात्राओं के शैक्षिक उपयोग के लिए बनाये गये गणित पार्क, भूगोल पार्क, 11 वीं और 12 वीं शताब्दी की प्राचीन मूर्तियों का अवलोकन किया। अटल लेब में निश्चय जैन द्वारा रेट्रोस्कोप, टेलिस्कोप, उदयराज कौरव व सत्यम द्वारा चंद्रयान 3, यशस्वी पटेल द्वारा पेपर डिटेक्टिंग मशीन, ध्रुव साहू एवं उनकी टीम द्वारा प्रोजेक्टर का प्रस्तुतिकरण दिया। कलेक्टर द्वारा छात्र- छात्राओं द्वारा अटल लेब में स्वनिर्मित प्रोजेक्ट की सराहना कर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। नवोदय विद्यालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में कलेक्टर श्रीमती पटले ने छात्र- छात्राओं से अपने छात्र जीवन के अनुभव साझा किये। उन्होंने नवोदय विद्यालय में पहले कदम को टर्निंग प्वाइंट बताया।

कलेक्टर ने किया चारगांव खुर्द गोटीटोरिया में

प्रधानमंत्री जनमन योजना के शिविर का निरीक्षण

ज़िला स्तरीय अधिकारी रहे मौजूद

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले ने गुरुवार को जिले की जनपद पंचायत चीचली के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत चारगांव खुर्द- गोटीटोरिया का औचक निरीक्षण कर यहां आयोजित किये जा रहे प्रधानमंत्री जनमन योजना के शिविरों का अवलोकन किया और प्रगति की जानकारी ली। कलेक्टर ने शिविरों में विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने आये ग्रामीणों से चर्चा की और पीएम जनमन योजना के बारे में भी विस्तार से बताया। कलेक्टर ने शिविर में पहाड़ी क्षेत्र पर नेटवर्क की समस्या के कारण हितग्राहियों

के जनमन योजना संबंधी कार्य के लिए और पहाड़ी क्षेत्रों के हितग्राहियों को लाने के लिए बनाए गए नोडल अधिकारी से प्रगति की जानकारी ली और समीक्षा की। उन्होंने हितग्राहियों से सतत संपर्क कर उन्हें शिविर में उपस्थित कराकर जनमन संबंधी कार्य करवाने निर्देश दिए। कलेक्टर ने यहां रोजगार सहायक श्री ऋतुराज कौरव से ई- केवायसी, जाति प्रमाण पत्र, समग्र की प्रगति की जानकारी ली। कलेक्टर श्रीमती पटले ने प्रधानमंत्री आवास योजना, जाति प्रमाण पत्र, आयुष्मान कार्ड, दिव्यांग एवं बुजुर्गों को मिलने वाली पेंशन, आधार अपडेट एवं नवीन आधार सहित केवायसी की जानकारी ली। कलेक्टर श्रीमती पटले ने आंगनबाड़ी एवं स्कूल संचालन की जानकारी भी ग्रामीणों से ली। पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले भारिया जनजाति के लोगों से उन्हें मिलने वाले राशन, आयुष्मान कार्ड, पेंशन, आधार कार्ड एवं ई-केवायसी के कार्यों की जानकारी और लंबित कार्यों को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश संबंधित नोडल अधिकारी को दिये। इस मौके पर एसडीएम श्रीमती कलावती ब्यारे, उप संचालक सामाजिक न्याय श्रीमती अंजना त्रिपाठी, उप संचालक कृषि, सीएचएमओ डॉ. राकेश बोहरे, परियोजना जिला अधिकारी महिला एवं बाल विकास, सीईओ जनपद पंचायत चीचली, जिला परियोजना समन्वयक डॉ. आरपी चतुर्वेदी सहित समस्त विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

सत्ता का सर्कस

क्या रावत को डर था कि इस्तीफा दे दिया तो भाजपा मंत्री नहीं बनाएगी?

दिनेश गुप्ता

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

1990 में सुंदरलाल पटवा के नेतृत्व में पहली बार भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनी थी। इस सरकार में बालाघाट जिले की लांजी विधानसभा सीट से निर्वाचित दिलीप भटेरे को मंत्रिमंडल में राज्य मंत्री बनाया गया था। वे निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव जीते थे। देश में दल बदल कानून लागू हो चुका था। भटेरे को मंत्रिमंडल में जगह मिली तो कांग्रेस ने दल बदल कानून के तहत उनकी सदस्यता समाप्त करने की याचिका विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष लगाई। पंडित बृजमोहन मिश्र,उस वक्त विधानसभा अध्यक्ष थे। कांग्रेस की याचिका के बाद विधानसभा अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा से बात की और उनसे कहा कि भटेरे की सदस्यता उसी स्थिति में बच सकती है जबकि वे अपनी सरकार को मिली-जुली सरकार घोषित कर दें। सुंदरलाल पटवा इसके लिए तैयार नहीं हुए। अध्यक्ष ने मंत्रिमंडल में शामिल होने के आधार पर दल बदल कानून का उल्लंघन मानते हुए भटेरे की सदस्यता समाप्त कर दी। मध्यप्रदेश में दल बदल कानून के तहत किसी विधायक की सदस्यता समाप्त करने का यह पहला और आखिरी मामला है। इसके बाद दल बदल कानून के तहत विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष याचिका तो लगी लेकिन, दलीय प्रतिबद्धता के कारण सदस्यता समाप्त करने का साहस कोई अध्यक्ष नहीं जुटा पाया। पिछला मामला सचिन बिरला का है।

सचिन बिरला 2018 के विधानसभा चुनाव में खंडवा जिले की बड़वाह विधानसभा सीट से कांग्रेस की टिकट पर विधायक चुने गए थे। लेकिन, बिरला ने अक्टूबर 2021 में खंडवा लोकसभा सीट पर हुए उप चुनाव के दौरान बेदिया गांव में तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के समक्ष भाजपा की सदस्यता ले ली थी। कांग्रेस विधायक दल के तत्कालीन सचेतक डॉ. गोविंद सिंह ने इस आधार पर दल बदल कानून के तहत उनकी सदस्यता समाप्त करने की याचिका तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम के समक्ष लगाई थी।

कांग्रेस की शिकायत पर विधानसभा स्पीकर गिरीश गौतम ने अपने आदेश में लिखा कि 'बिना प्रमाणित साक्ष्य के आधार पर किसी विधायक की सदस्यता रद्द नहीं की जा सकती है। सचिन बिरला का अपने राजनीतिक दल को छोड़ने का न तो कोई पत्र है, न ही सदन के अंदर उनके आचरण से ऐसा लग रहा है कि उन्होंने पार्टी त्याग दी है।' उन्होंने कांग्रेस पर टिप्पणी करते हुए लिखा कि आपका विधायक विधानसभा के बाहर क्या आचरण करता है, यह पार्टी (कांग्रेस) के आंतरिक अनुशासन का विषय हो सकता है, न कि विधानसभा की सदस्यता रद्द करने का। दरअसल, कांग्रेस ने जितने भी प्रमाण दिए हैं, वे सभी वीडियोस, फोटोज, मीडिया कतरनें, कार्यक्रमों के शॉट्स दिए हैं, लेकिन सचिन बिरला ने कांग्रेस त्याग दी, इसकी चिट्ठी नहीं दे पा रहे हैं। न तो यह चिट्ठी उन्होंने विधानसभा स्पीकर को दी है, न ही कांग्रेस को। जबकि पूरे घटनाक्रम में किसी पत्र की आवश्यकता ही नहीं थी। कांग्रेस के पास इस्तीफे की चिट्ठी ही नहीं थी। संदेह का लाभ बिरला गया।

स्पीकर ने याचिका को तथ्यपूर्ण नहीं माना। अपनी सदस्यता बचाने के लिए सचिन बिरला एक साल से भी लंबे समय तक सदन की कार्यवाही में हिस्सा लेने से बचते रहे। विधानसभा अध्यक्ष के आदेश के मुताबिक वे कांग्रेस के सदस्य थे। इस कारण सदन में उनकी सीट भी विपक्षी सदस्यों के साथ थी। लेकिन, वे काम भाजपा का कर रहे थे। सदन में आते तो दोहरा चरित्र बाहर आ जाता। सचिन बिरला अक्टूबर 2023 में विधानसभा के आम चुनाव से पहले औपचारिक तौर पर कांग्रेस से इस्तीफा देकर भाजपा की टिकट पर चुनाव लड़ा। वे अभी विधायक हैं।

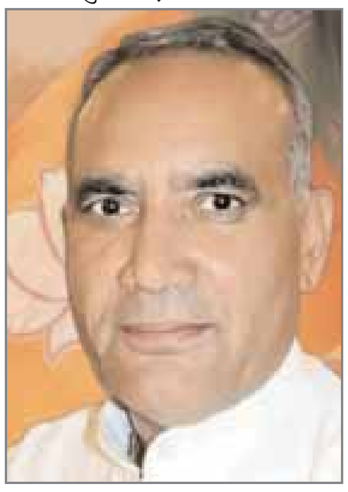

सदस्यता जाने के डर से सदन में नहीं गए रावत सचिन बिरला की तरह ही रामनिवास रावत और निर्मला सप्रे की विधायकी बचाने की कोशिश लगातार चल रही थी। कांग्रेस ने रावत के साथ-साथ निर्मला सप्रे की सदस्यता समाप्त करने की याचिका विधानसभा अध्यक्ष के समक्ष प्रस्तुत की है। निर्मला सप्रे बीना से विधायक हैं। उन्होंने भी लोकसभा चुनाव के दौरान ही भाजपा का प्रचार शुरू कर दिया था। लेकिन,कांग्रेस की सदस्यता और विधायक पद से इस्तीफा अब तक नहीं दिया है। कांग्रेस ने वर्षाकालीन सत्र के लिए अपने सदस्यों की जो बैठक व्यवस्था बनाई थी,उसमें रामनिवास रावत और निर्मला सप्रे दोनों को कांग्रेस से पृथक सीट आवंटित करने का आग्रह विधानसभा अध्यक्ष से किया था। अध्यक्ष ने नई बैठक व्यवस्था में इनकी सीट कांग्रेस दल से अलग भी कर दी थी। लेकिन,दोनों ही पांच दिन चले विधानसभा सत्र में हिस्सा लेने के लिए सदन के भीतर नहीं गए। सदन में जाते तो सीट पर बैठना पड़ता। विपक्ष सदन में ही हंगामा खड़ा कर देता। निर्मला सप्रे विधानसभा परिसर में आईं। अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर के कक्ष में जाकर मिली भी। रावत ने छूट ले ली। कांग्रेस की दल बदल कानून के तहत याचिका आ जाने के बाद अब अध्यक्ष को तीन माह के भीतर इसका निपटारा करना है। दल बदल कानून में याचिका का निपटारा समय-सीमा में करने का फैसला सुप्रीम कोर्ट का है।

रामनिवास रावत रावत ने अपनी सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए यह जानकारी दी है कि उन्होंने 5 जुलाई को विधायक पद से इस्तीफा विधानसभा सचिवालय को भेज दिया था। पांच जुलाई को विधानसभा सत्र का समापन शाम 5 बजकर 26 मिनट पर हुआ। यह समय सदन की कार्यवाही विवरण का है। रावत ने अपने पद से इस्तीफा पांच जुलाई को दिया था तो आठ जुलाई तक विधानसभा सचिवालय ने इसके बारे में कोई आधिकारिक सूचना क्यों जारी नहीं की? जाहिर है कि शपथ से उठे विवाद पर पर्दा डालने के लिए पांच जुलाई को जिक्र किया गया हो सकता है? इससे पहले दो बार शपथ लेने का उनका वीडियो खूब वायरल हो गया। पहली बार उन्होंने मंत्री के बजाय राज्यमंत्री पद की शपथ ले ली। गलती सामने आई तो राज्यपाल मंगू भाई पटेल को दोबारा शपथ ग्रहण करनी पड़ी। मध्यप्रदेश में शपथ का यह अजब कारनामा हमेशा याद रखा जाएगा।

जिस वक्त रावत ने मंत्री पद की शपथ ली उस वक्त वे कांग्रेस के विधायक थे। मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव में निर्वाचित विधायकों की जो सूची चुनाव आयोग ने राज्यपाल को दी थी,उसमें भी रामनिवास रावत का नाम कांग्रेस विधायक के तौर पर दर्ज है। राज्य में भाजपा की पूर्ण बहुमत वाली सरकार है। रामनिवास रावत भाजपा के विधायक नहीं है। यहां बड़ा सवाल यह है कि संवैधानिक प्रमुख होने के नाते क्या राज्यपाल को इस बात की पुष्टि नहीं करना चाहिए कि जिस व्यक्ति को शपथ दिलाई जा रही है वह गैर विधायक है या किसी राजनीतिक दल से निर्वाचित विधायक है। गैर विधायक होने की स्थिति में मुख्यमंत्री इसकी सूचना राज्यपाल को देते हैं। विधायक न होने पर भी कोई भी व्यक्ति छह माह तक मंत्री रह सकता है। इसका प्रावधान संविधान में है। लेकिन, सरकार में बैठे राजनीतिक दल से इतर किसी अन्य दल का विधायक मंत्री बनाया जाता है तो राज्यपाल क्या कार्यवाही करेगा,यह स्पष्ट नहीं है। अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरह के उदाहरण हैं। महाराष्ट्र में शिवसेना और राष्ट्रवादीकांग्रेस पार्टी के कथित विभाजन को आधार मानकर विधायकों ने इस्तीफा नहींदिया था। लेकिन, मध्यप्रदेश में ही जब ज्योतिरादित्य सिंधिया समर्थक विधायकों ने कांग्रेस छोड़ी तब विधायक पद से भी इस्तीफा दिया। इनमें कई गैर विधायक के नाते शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार में मंत्री भी बने। लेकिन, उप चुनाव की घोषणा के साथ ही इन सभी ने मंत्री पद छोड़ दिया था। रामनिवास रावत,भाजपा सरकार में मंत्री बनने के बाद भी कांग्रेस से इस्तीफा नहीं देते हैं तो भी उनकी सदस्यता समाप्त होना तय था। इस कारण भी इस्तीफा दे ही दिया। अब चुनाव मैदान में जाना होगा।

दलबदलुओं का मंत्रिमंडल में दबदबा रामनिवास रावत और निर्मला सप्रे से ज्यादा जीत का आत्म विश्वास कमलेश में देखने को मिला। कमलेश शाह छिंदवाड़ा जिले के अमरवाड़ा से कांग्रेस की टिकट पर दिसंबर 2023 में विधायक चुने गए थे। लोकसभा चुनाव के समय वे कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए। भाजपा में शामिल होते ही उन्होंने विधायकी से भी इस्तीफा दे दिया। अमरवाड़ा में चुनाव प्रक्रिया चल रही है। सोमवार को वहां उप चुनाव के लिए प्रचार थम गया। दस जुलाई को वोट डाले जाएंगे। कमलेश विधायक चुन लिए जाते हैं तो उन्हें भी मंत्री बनाने के लिए शपथ समारोह जल्द देखने को मिल सकता है। मंत्रिमंडल में अभी दो स्थान रिक्त हैं। रामनिवास रावत द्वारा ली गई शपथ के बाद मुख्यमंत्री सहित कुल 32 सदस्यीय मंत्रिमंडल हो गया है। मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री सहित अधिकतम 34 मंत्री बनाए जा सकते हैं। 3 दिसंबर 2023 को मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव के नतीजे आए थे। 8 दिन बाद 11 दिसंबर को मुख्यमंत्री पद पर डॉ. मोहन यादव और दो उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल, जगदीश देवड़ा का चयन किया गया। इसके 2 दिन बाद 13 दिसंबर को सीएम और दोनों डिप्टी सीएम ने शपथ ली थी। 12 दिन बाद 25 दिसंबर को पहला मंत्रिमंडल विस्तार हुआ। 28 मंत्रियों को शपथ दिलाई गई थी। 18 विधायकों को कैबिनेट और 10 विधायकों को राज्य मंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई थी। मंत्रिमंडल विस्तार के 5 दिन बाद 30 दिसंबर को मंत्रियों को विभागों का बंटवारा किया गया था। अब रामनिवास रावत को मिलाकर मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्रियों की संख्या 19 हो गई है। मुख्यमंत्री के अलावा दो उप मुख्यमंत्री हैं। छह स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री हैं। चार राज्य मंत्री हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के 32 सदस्यीय मंत्रिमंडल में कुल छह दलबदलु हैं। ये सर्वश्री उदय प्रताप सिंह,तुलसी सिलावट, एदल सिंह कंसाना, गोविंद राजपूत प्रद्युमन सिंह तोमर, निर्मला भूरिया और रामनिवास रावत हैं। रामनिवास रावत नए-नए भाजपा में आए हैं। उन्होंने 30 अप्रैल को भाजपा के साथ चुनावी मंच साझा किया था। जबकि निर्मला भूरिया 1998 में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं थीं। वे 1993 में पहली बार कांग्रेस की टिकट पर विधायक बनी थीं। वे स्वर्गीय दिलीप सिंह भूरिया की पुत्री हैं। दिलीप सिंह भूरिया, एक समय कांग्रेस के कद्दावर आदिवासी नेता थे। लेकिन, दिग्विजय सिंह की राजनीति के कारण उन्हें कांग्रेस छोड़ना पड़ी थी। दिग्विजय सिंह,कांतिलाल भूरिया को समर्थन करते हैं। उदय प्रताप सिंह 2013 में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए। वे पहली बार 2007 में विधायक बने थे। एदल सिंह कंसाना,गोविंद राजपूत, तुलसी सिलावट और प्रद्युमन सिंह तोमर मार्च 2020 में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे। कंसाना मुरैना जिले की सुमावली विधानसभा सीट से विधायक हैं। रामनिवास रावत श्योपुर जिले की विजयपुर विधानसभा सीट से छठवीं बार के विधायक हैं। कांग्रेस की राजनीति में उन्हें ज्योतिरादित्य सिंधिया का करीबी माना जाता रहा है। लेकिन, उन्होंने सिंधिया के साथ कांग्रेस नहीं छोड़ी थी। अब भाजपा में रावत की राजनीति सिंधिया से अलग चलती दिख रही है।

भाजपा की जीत में छुपी कांग्रेस की कमजोरी

मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी में पिछले कुछ दिनों से चिंतन-मंथन बैठकों के जरिए यह पता लगाने की कोशिश हो रही है कि राज्य में पार्टी इतनी कमजोर स्थिति में कैसे पहुंच गई। एक कारण तो मंत्री पद की शपथ लेने से पहले रामनिवास रावत ने जी मीडिया से बातचीत में बता दिया। रावत ने बातचीत में यह खुलासा किया कि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े रहे हैं। संघ से जुड़ा होना कोई अपराध नहीं है। लेकिन,राजनीति में कांग्रेस और भाजपा की विचारधारा का कोई मेल नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह दिन-रात संघ विरोधी राजनीति करते हैं। लेकिन, वे भी अब संघ की तारीफ कर रहे हैं। संघ के काम करने का तरीका ही ऐसा है कि उसमें शोर सुनाई नहीं देता। कांग्रेस में ऐसे बहुत से चेहरे हैं जो अपनी ही पार्टी को नुकसान पहुंचा रहे हैं। इस बात को भोपाल से लेकर दिल्ली तक किसी ने सुना ही नहीं। कांग्रेस पार्टी मध्यप्रदेश से पहले उत्तर प्रदेश में कमजोर हुई थी। उत्तर प्रदेश में कमजोर होने के जो कारण कांग्रेस ने समझे वे मध्यप्रदेश में नहीं हैं। उत्तर प्रदेश में बसपा-सपा के अलावा अन्य छोटे दलों ने भी कांग्रेस की जमीन कमजोर की है। मध्यप्रदेश में ये दल अपने पैर नहीं जमा पाए। यहां भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला है। इस सीधे मुकाबले में भी कांग्रेस कमजोर हो गई,यह निश्चित तौर पर चिंता का विषय है। 2003 से पहले गैर कांग्रेसी दल कभी तीन साल से ज्यादा सरकार ही नहीं चला पाते थे। अब बीस साल हो गए हैं। कांग्रेस ने सत्ता में वापसी की तो मजबूती से पकड़कर नहीं रख पाई। कांग्रेस के कमजोर होने के कारण की जड़ 2003 में ही मिलेगी। लोकसभा और विधानसभा चुनाव की हार ने तो सिर्फ खोखली जमीन दिखाई है। कांग्रेस कार्यालय में जो बैठकें हुई उसमें प्रत्याशियों से विधानसभा और लोकसभा क्षेत्र का नाम पूछने के साथ चुनाव में पड़े कुल वोट, प्रत्याशी को मिले वोट, हार जीत का अंतर की जानकारी भी मांगी गई है। प्रत्याशी को अपना नाम और विधानसभा क्षेत्र या लोकसभा क्षेत्र का नाम भी लिखकर देने के लिए कहा गया है। इन सभी बिंदुओं के आधार पर पार्टी आगामी दिनों की रणनीति तय करेगी और पार्टी की मजबूती के लिए जरूरी निर्णय लिए जाएंगे।

सिकल सेल रोग के लिए उचित आयुष औषधियों को करें चिन्हित

कार्य योजना तैयार करें आयुष विभाग : राज्यपाल श्री पटेल

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि आयुष विभाग सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए कार्य योजना तैयार करें। अभियान की गतिविधियों के लिए आवश्यक वित्तीय बजट का प्रावधान करें। गुरूवार 11 जुलाई को राज्यपाल श्री पटेल राजभवन में आयुष विभाग की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि मध्यप्रदेश में सिकल सेल रोग उन्मूलन के प्रयासों में आयुष विभाग की प्रभावी भूमिका की व्यापक सम्भावनाएं हैं। प्रदेश में विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक औषधियों की प्रचुर मात्रा उपलब्ध है। जनजातीय समुदाय के रूप में पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान का समृद्ध भंडार मौजूद है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के साथ इसे समायोजित किए जाने की आवश्यकता है। राज्यपाल श्री पटेल ने विभाग को निर्देशित किया कि जनजातीय बहुल इलाकों में शिविर लगाकर आयुर्वेद आधारित पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान के विशेषज्ञों के साथ सिकल सेल उपचार संबंधी जानकारियों को साझा करें। उनके अनुभवों और ज्ञान को संयोजित करें। सिकल सेल रोग के लिए उचित आयुष औषधियों को चिन्हित करें।

मंत्री आयुष श्री इंदर सिंह परमार ने बताया कि विभाग द्वारा समेकित चिकित्सा की कार्य योजना तैयार की है। अन्य चिकित्सा पद्धतियों के साथ सामंजस्य के साथ रोग निदान प्रयासों में सहयोग किया जा रहा है। आयुष औषधियों की मेडिकल किट तैयार की गई है जिन रोगों के लिए एलोपैथी चिकित्सा पद्धति में उपचार औषधि उपलब्ध नहीं है। उन्होंने बताया कि विशेष रूप से वंचित जनजातीय समूह (PVTG) विकास खंडों में राष्ट्रीय आयुष मिशन अंतर्गत आयुष मोबाइल युनिट गठित किया जाना प्रस्तावित है। प्रथम चरण में मंडला, बालाघाट में बैहर, डिंडोरी, अनूपपुर में पुष्पराजगढ़, शहडोल, उमरिया, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, छिंदवाड़ा में तामिया और ग्वालियर के डबरा में स्थापित की जाएगी। जनजाति प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री दीपक खांडेकर ने बताया कि प्रदेश में सिकल सेल एनीमिया रोग की स्क्रीनिंग का कार्य तेज गति से प्रगतिरत हैं। अभी तक 55 लाख लक्षित आबादी की स्क्रीनिंग हो चुकी है।

उमरिया-राजगढ़ में बारिश

रीवा-सीधी में 4 इंच से ज्यादा पानी गिरने का अनुमान,भोपाल-इंदौर में हल्की बरसात होगी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के पूर्वी हिस्से रीवा-सीधी में आज भारी बारिश होने का अनुमान है। ज्यादातर जिलों में बादल छाए हुए हैं। मौसम विभाग ने मऊगंज, सतना, मैहर, सिंगरौली, निवाड़ी, शिवपुरी, अशोकनगर, मुरैना में भी तेज बारिश का अलर्ट जारी किया है। अगले 24 घंटे में यहां 4 इंच से ज्यादा पानी गिर सकता है। उमरिया के चंदिया में दो दिन बाद रिमझिम बारिश हुई। पाली, मानपुर में धूप और छांव वाला मौसम है। राजगढ़ जिले के पचोर में गुरुवार सुबह तेज गर्जना के साथ बारिश हुई। लोगों को दो दिन से हो रही उमस से राहत मिली है।

मऊगंज में तेज बारिश से सड़कें सूनी पड़ीं: मऊगंज जिले में दोपहर करीब 1.30 बजे से तेज बारिश शुरू हुई। बारिश के साथ हवा की गति भी तेज रही। इस हनुमना थाना क्षेत्र में हवा के साथ तेज बारिश के कारण सड़कें सूनी हो गई हैं। इक्का-दुक्का कार वाले लोग निकले लेकिन ज्यादातर लोग बाहर नहीं निकले। बारिश में ध्यान लीन जैन संतों का आया वीडियो, लोग बोले- ऐसे दृश्य कभी-कभार देखने मिलते हैं दमोह के कुंडलपुर में जैन तीर्थ क्षेत्र से आचार्य श्री समय सागर महाराज अपने 21 शिष्यों के साथ खजुराहो की ओर विहार कर चुके हैं। आचार्य समय सागर आहारचर्या के लिए हटा ब्लॉक के कलकुआं गांव के एक स्कूल में ठहरे थे। उनके शिष्य स्कूल परिसर में अलग-अलग स्थान पर ध्यान में लीन हो गए। कुछ देर बाद तेज बारिश शुरू हो गई। सभी जैन मुनि अपनी साधना में लीन बने रहे। लोगों ने कहा, ऐसे दृश्य कभी-कभार देखने मिलते हैं।

सागर में सुबह बादल छाए, दोपहर में बारिश

सागर में सुबह से बादल छाए रहे। दोपहर में बारिश हो रही है। ठंडी हवाओं और बारिश ने लोगों को उमस से राहत दी।

दमोह में सवा, भोपाल में आधा इंच से ज्यादा बारिश: बुधवार को दमोह, भोपाल, ग्वालियर, छिंदवाड़ा, पचमढ़ी और शिवपुरी में बारिश हुई। शाम तक दमोह में सवा इंच और भोपाल में आधा इंच से ज्यादा पानी गिरा।

ऑटो पर चढ़ा ट्रक, दंपत्ति, बेटे-भतीजी की मौत

ऑटो चला रहा भाई घायल; बेटी के ससुराल से लौट रहा था परिवार

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में तेज रफ्तार ट्रक ने ऑटो को रौंद दिया। हादसे में ऑटो की पिछली सीट पर बैठे पति-पत्नी, बेटे और 7 साल की भतीजी की मौत हो गई। ऑटो चला रहा भाई रोड पर दूर फिंका गया। पुलिस को ऑटो से चारों शव निकालने के लिए आधा घंटे से ज्यादा समय लग गया। हादसा गुरुवार सुबह 3 से 4 बजे के एबी रोड पर पुरानी छावनी में हुआ। घटनास्थल पर ट्रक खड़ा मिला, लेकिन इसका ड्राइवर फरार है। बानमोर (मुरैना) का रहने वाला परिवार बड़ी बेटी के ससुराल मालनपुर (भिंड) में भात देकर लौट रहा था। आज ही बेटी के देवर की बारात और टीका है। मृतकों के नाम नरेश बाल्मीकि (52), पत्नी ऊषा (48), बेटा राहुल (22), भतीजी अंकिता (7) पुत्री मनोज हैं। घायल ऑटो ड्राइवर अजय को जेएएच के ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया है। अजय, नरेश के रिश्ते का भाई है।

परिवार उनके लौटने का इंतजार कर रहा था: नरेश के दो बेटी-दो बेटे हैं। बड़ी बेटी निशा की ससुराल मालनपुर में है। 10 जुलाई को निशा के देवर की भात की रस्म हो रही थी। इसमें शामिल होकर देर रात 2 बजे सभी मालनपुर से ग्वालियर होते हुए मुरैना के लिए निकले थे। घर पर परिवार उनके लौटने का इंतजार कर रहा था, सुबह 5 बजे पुलिस का फोन उनके पास पहुंचा और घटना का पता लगा।

ट्रिपल मर्डर और सुसाइड के पीछे की वजह अफेयर

पत्नी, दो बेटों की हत्या के बाद रात 12 बजे खून से सने हाथ पोंछते कैमरे में कैद हुआ था पति

सतना (नप्र)। सतना के नजीराबाद में दिलदहलाने वाली वारदात के पीछे की कहानी चौंकाने वाली निकली है। पत्नी के अफेयर से परेशान होकर युवक पत्नी और दो बेटों की धारदार हथियार से हत्या कर ट्रेन से कटा था। उसने कोशिश की कि पत्नी शादी के पहले के अफेयर को भूलकर उसके साथ रहे, लेकिन पत्नी बार-बार अपने प्रेमी के पास चली जाती थी। उसने बच्चे के एडमिशन तक में पति की जगह पिता के रूप में पत्नी का नाम लिखवाया था। हत्या के बाद वह रात 12 बजे कमरे से बाहर जाते कैमरे में कैद हुआ। वह बाहर हाथ पोछते हुए निकलते दिखा है। सतना में मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात राकेश चौधरी ने पत्नी संगीता (24), बेटे निखिल (8) और ऋषभ (6) की हत्या की थी। पुलिस तफ्तीश में तमाम ऐसे दस्तावेज सामने आए जो आत्मघाती कदम उठाने वाले राकेश चौधरी और उसकी पत्नी संगीता के बीच रिश्तों की कड़वाहट की तरफ साफ इशारा कर रहे हैं। एसपी आशुतोष गुप्ता ने बताया कि यह कहानी कुछ महीनों नहीं बल्कि 10 साल पहले शुरू हुई थी। दरअसल, संगीता का शादी के पहले से कोटर क्षेत्र के खम्हरिया गांव के रहने वाले कमलेश चौधरी से अफेयर था। कमलेश अभी कटनी में रहता है। संगीता उसी से शादी करना चाहती थी, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया।

राकेश से शादी के बाद भी वह कमलेश के संपर्क में रही। वह उससे फोन पर तो बात करती ही थी। कई बार ससुराल से भाग कर उसके पास कटनी भी चली जाती थी। 15 फरवरी को भी संगीता कमलेश के साथ चली गई थी। हालांकि कुछ दिनों बाद वह वापस राकेश के पास आ गई थी। 14 जून को वह ऋषभ और निखिल को साथ लेकर कमलेश के पास कटनी चली गई थी। एसपी ने बताया कि पत्नी के धोखे से गुस्साए पति ने दिलदहलाने वाले हत्याकांड को अंजाम दिया।

बेटे के पिता की जगह लिखवाया प्रेमी का नाम: संगीता ने 29 जून को कटनी के झिंझरी में रघुवंश उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में बड़े बेटे निखिल का एडमिशन करवाया। स्कूल के फॉर्म में उसने पिता के तौर पर पति राकेश की जगह प्रेमी कमलेश का नाम लिखवाया। 5 जुलाई को वह वापस राकेश के पास लौट आई। राकेश ने उसे फिर से माफ कर दिया और सतना में पत्नी बच्चों को साथ रखने के लिए किराए से कमरा खोजने लगा। संगीता के मोबाइल से पता चला कि वह कमलेश से संपर्क में थी। आखिरी कॉल भी उसी को किया था।

कटनी में बनवाया एफिडेविट, छिपाई शादी की बात

जांच में खुलासा हुआ है कि फरवरी में संगीता ने कटनी में एक एफिडेविट बनवाया था, जिसमें उसने राकेश के साथ 10 साल पहले हुई शादी और दो बच्चों की मां होने की बात छिपाई। उसने पति और ससुराल का जिक्र करने की जगह पिता समय लाल चौधरी का नाम और मायके का पता रेउहान खांच बिरसिंहपुर जिला सतना लिखवाया था।